Moti Lal Kemmu's

भाँड-दुहाई

Bhaand-Duhayee

A Contemporary Kashmiri play based n *Bhand Pather*

Hindi Translation by Shashi Shekhar Toshkhani

अनुवादक की ओर से

मोती लाल क्यमू का यह नाटक आतंकवादी हिंसा के झटकों से उत्पन्न परिस्थितियों में उन आधारों के ढह जाने के बारे में है जिस पर कश्मीर का लोकाचार सदियों से टिका रहा है। साथ ही इसमें कश्मीर की लोक-सांस्कृतिक परंपराओं की अदम्य आंतरिक शक्ति की ओर संकेत है जिससे जुड़े लोगों के पास आतंकवादियों और उनकी कट्टरपंथी विचारधारा की चुनौतियों का सामना करने का साहस है।

नाटक का अनुवाद करते समय मैंने उसकी मूल भावना को पकड़ने और उसके अर्थ संकेतों को बिना किसी क्षति के हिन्दी के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। इस प्रक्रिया में मैंने कश्मीरी लोक-नाट्य विधा भाँड पाथर की हिन्दी से पुनर्रचना करते हुए स्थानीय भाषा के विशिष्ट प्रयोगों और मुहावरों को इस प्रकार प्रस्तुत करने की कोशिश की है कि वे हिन्दी के अपने लगें। यह एक ऐसी विधा है जो शब्द क्रीड़ा और श्लेष पर निर्भर होने के साथ-साथ गीत और नृत्य का सहारा लेती है। जहां तक बन पड़ा है मैंने नाटक में आये कश्मीरी गीतों के मूल लय को सुरक्षित रखा है।

इस दृष्टि से नाटक का अनुवाद मेरे लिये बहुत कुछ परकाया, या कहें तो परहृदय प्रवेश जैसा रहा है। चुनौती भरा होने पर भी मैं इस काम को शायद इसलिये कर पाया हूँ कि अपनी ज़मीन से उखड़ने और निर्वासित होने की उस यन्त्रणा को मैंने भी बहुत कुछ उसी तरह झेला है जिस तरह मूल नाटक के लेखक ने।

–शशि शेखर तोषखानी

(मूल कश्मीरी में नाटक का शीर्षक है 'वेलि डख चलन'। सम सामयिक भारतीय साहित्य (साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली) द्वारा 'जब आधार नहीं रहते' के नाम से प्रकाशित हुआ है।)

मोती लाल क्यमू कृत

कश्मीरी नाटक

भाँड-ढुहाई

अनुवादक

शशि शेखर तोषखानी

© मोती लाल कम्मू,
5, अपना विहार,
कुंजवानी तालाब,
जम्मू तवी -180010

प्रथम संस्करण : 2002

प्रकाशक : मोती लाल क्यमू
5, अपना विहार,
कुंजवानी तालाब,
जम्मू तवी -180010

फोन : 480439

प्रतियाँ : 500

मुद्रक : जे. के. आफ्सेट प्रेस. दिल्ली

मिलने का पता :-

1. किताब घर
कनाल रोड, जम्मू -18001
2. 5- अपना विहार,
कुंजवनी, जम्मू -10

चित्र और मुख पृष्ट
राष्ट्रीय नाटय विद्यालय, नई दिल्ली

नाटककार की लिखित अनुमति के बिना इस नाटक को मंचित न किया जाये।

मुल्य : 25/=

प्रथम प्रदर्शन 22 फरवरी 1998

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मुखौटा उत्सव

रूप प्रतिरूप

के लिए मेघदूत, रवीन्द्र भवन में किया गया।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

रंगमंडल

प्रस्तुति

मोती लाल क्यमू कृत

भाँड-दुहाई

अनुवादक

शशि शेखर तोषखानी

मंच -पार्श्व

संगीत संयोजन	पं० कृष्ण लंगू
मंच परिकल्पना	**एम० के० रैना**
मंच सहायक	बृजेश शर्मा, पंकज झा
मंच व्यस्थापक	राजेश शर्मा
प्रकाश परिकल्पना	**पराग शर्मा**
प्रकाश संचालन	जी० एस० मराठे
सहायाक	राधेश्याम पाण्डेय, अंजू जेतली, सुलेमान, चितरंजन त्रिपाठी
वस्त्र विन्यास	**कृति वी० शर्मा**
वस्त्र निमार्ण	गुरशरन कौर, चरनतजी सिंह भाटिया
सहायक	भरत सिंह नेगी, सुन्दर छाबड़ा, विनीता टंडन, वन्दना शर्मा
रंगपट्टी परिकल्पना	पंकज झा
मंच सामग्री	एम० के० रैना
मंच सामग्री प्रभारी	मोती लाल खरे
सहायक	घनश्याम गर्ग
पोस्टर, स्मारिका परिकल्पना वीरजी मुंशी, पंकज झा	
सहायक	बृजेश शर्मा, पंकज देवले
स्मारिका प्रकाशन	सी० डी० तिवारी
सहायक	राहुल चौधरी
काश्मीरी भाँड (संगीतज्ञ)	गुलाम रसूल भगत (सुरनाई), गुलाम अहमद (सुरनाई), गुलाम रसूल भगत,(ढोल और नॉट), गुलाम मोहम्मद (नागड़ा), दिलावर घनाई (रबाब), गुल मोहम्मद भगत (तुम्बकनारी)
संगीतकार	ओम प्रकाश (तबला, ढोलक), महेन्द्र शर्मा (हारमोनियम)
रूप सज्जा	श्रीवर्धन त्रिवेदी, मंदाकिनी गोस्वामी

मंच पर

हिरन	मेघना मलिक, कृष्णा राज़
दूधवाला	सुन्दर छाबड़ा
शेर	दिव्येन्दु भट्टाचार्य, पराग शर्मा
मागुन	सुब्रत दत्ता
नुन्दा	राजीव खन्ना
भौंडिन, रानी	हरविन्दर कौर
मम्मा मसखरा, कमाल शेर, राजा	सीताराम पांचाल महेन्द्र मेवाती
द्वारपाल, डायन	दिव्येन्दु भट्टाचार्य
सात राजकुमारियाँ	झिलमिल हजारिक, मेघना मलिक, मांदाकिनी गोस्वामी, अंजू जेतली, सुनीता मेवाती, कृष्ण राज़, कविता कुन्द्रा
मसखरा -1	विजय राज़
मसखरा-2	श्रीवर्धन त्रिवेदी
मसखरा-3	पंकज झा
गुपाली	मंदाकिनी गोस्वामी
मुख्य नकाबपोश-1	पराग शर्मा
नकाबपोश-2	बृजेश शर्मा
नकाबपोश-3	पदम सिंह
ग्रामीण	महेन्द्र शर्मा, मोती लाल खरे,घनश्याम गर्ग, सुन्दर छाबड़ा, रामजी बाली, पराग शर्मा, पदम सिंह, बृजेश शर्मा, झिलमिल हज़ारिका, मेघना मलिक, मंदाकिनी गोस्वामी, अंजू जेतली, सुनीता मेवाती, कृष्णा राज़, कविता टंडन, बंदना शर्मा।

सहायक	पंकज झा
ध्वनी	एस० एन० दासगुप्ता
सहायक	मुकेश कुमार
मंच निर्माण	अब्दुल हकीम, बचन सिंह, संत राम
सहायक वस्त्र सज्जा	सुरजीत सिंह, रजनी देवी
मंच सहायक	पदम सिंह
प्रदर्शनी	पृथ्वी सिंह नेगी
प्रचार	टी० आर० बख्शी
छायाचित्र	एस० त्यागराजन
सहायक निदेशक	राजेश शर्मा
अनुवाद	शशि शेखर तोषखानी
परिकल्पना एवं निर्देशक	**एम० के० रैना**

भांड दुहाई

(जब आधार नहीं रहते हैं)

यह नाटक आंतकवादी हिंसा के झटकों से उत्पन्न परिस्थितियों में उन आधारों के खिसकने के बारे में है जिन पर कश्मीर का लोकाचार टिका रहा है। इस में भाँडों के एक गाँव के एक मागुन अथवा अगुआ के माध्यम से आम कश्मीरी के मन में आंतवादियों और उन की विचारधारा के प्रति पनप रहे रोष और विद्रोह की ओर संकेत है। यह इशारा भी अर्थवान है कि कश्मीर में आंतकवाद को चुनौती लोक सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षकों की ओर से मिल रही है। इन परंपराओं की जड़ें मानवतावादी मूल्यों में गहरी है। नाटक में मागुन को अपने इकलौते बेटे और खुद अपनी जान की कीमत दे कर इन परंपराओं और मूल्यों की रक्षा करते दिखाया गया है।

'मागुन' शब्द किसी व्यक्ति विशेष का नाम न हो कर भाँडों के अगुआ के लिए प्रयुक्त होता है। यह शब्द संभवतः संस्कृत 'महागुणी' से निकला है। कश्मीरी भाषा में इस का प्रायोग सब से पहले चौदहवीं शताब्दी के महान संत कवि शेख नूरूद्दीन के पदों में मिलता है।

संस्कृत नाटकों के सूत्राधार की तरह मागुन विषय-प्रवेश करने और पात्र-प्रवेश कराने के लिए नाटक के प्रारंभ में मंच पर आता है। उस के बाद स्वयं राजा अथवा किसी प्रमुख पात्र की भूमिका निभाता है। दर्शकों और अभिनेताओं के बीच एक सेतु का काम करता हुआ वह इस प्रकार से निर्देशक का उत्तरदायित्व भी सँभालता है। वही इस बात का निर्णय करता है कि कौन अभिनेता किस पात्र का अभिनय करेगा, कौन-से संवाद बोलेगा, कौन-से गीत गाएगा।

कश्मीर में लगभग 80 गाँवों में भाँड रहते हैं। हर गाँव में भाँडों के टोले का अपना-अपना मागुन होता है। ब्याह-शादी के अवसरों और ईद आदि

त्योहारों पर जब ये भाँड ढोल-शहनाई बजाने जाते हैं अथवा उत्सवों और मेलों-ठेलों में 'भाँड जश्न' यानी स्वाँगों अथवा लोक नाटकों का प्रदर्शन करने जाते हैं तो मागुन उन का नेतृत्व करता है। उस के लिए कश्मीरी लोक नाट्य विधा 'भाँड पोथुर' के हर अंग--अभिनय, गीत-संगीत, नृत्य, मंच व्यवस्था-का पूरा पूरा ज्ञान होना अवश्यक है। मागुन ही प्रदर्शन के लिए स्वाँगों का चयन करता है और उन के प्रस्तुतीकरण की व्यवस्था भी। भाँडों की सभी साज-सामान, वस्त्राभूषण आदि उसी के पास सुरक्षित रहते हैं। देखा जाए तो मागुन अपने आप में एक पूरी संस्था होता है-लोक-नाट्य और लोक-संस्कृति की परंपरा का संरक्षक।

मंच पर उस का साथ देने के लिए एक स्त्री-पात्रा 'गुपाली' को लाने की भी परंपरा है। कश्मीरी काव्य में गुपाली का उल्लेख अनेक स्थानों पर हुआ है। वास्तव में उस का काम बहुत कुछ वैसा ही होता है जैसा संस्कृत नाटकों में नटी का। प्रस्तुत नाटक में गुपाली को इस से अधिक व्यापक भूमिका दी गई है और नायिका के रूप में लाया गया है।

इस में मागुन और गुपाली दोनों जहाँ कश्मीरी लोक संस्कृति के द्वारा क्षत-विक्षत चेहरे का बिम्ब प्रसतुत करते है, वहाँ उस की अदम्य आंतरिक शक्ति से भी परिचित कराते हैं।

शशि शेखर तोषखानी

पात्र

मागुन : भाँडों के एक टोले का प्रतिष्ठित अगुआ, आयु 55 वर्ष
नुंदा : मागुन का युवा पुत्र जो आंतकवादी बन गया है, आयु 22 वर्ष
भाँडिन : मागुन की पत्नी, नुंदा की माँ, आयु 50 वर्ष
मम्मा मसखरा : वरिष्ठ भाँड मसख़रा, आयु 50 वर्ष
कमाल शेर : वरिष्ठ भाँड अभिनेता, आयु में मागुन के बराबर
वाद्यकार : शहनाईवादक, ढोलकवादक, नगाडा बजाने वाले
नटुवे : कुल सात
मसखरे : कुल पाँच
नक़ाबपोश : कम से कम नौ

(वाद्यकार सब शहनाई, ढोल या नगाड़ बजाने वाले ही हों, आवश्यक नहीं। तुंबकनारी[1], रबाब या सारंगी बजाने वालों से भी काम चल सकता है, यदि वे अपनी कला में कुशल हों। नटुवे और मसखरे सात बहनों का अभिनय भी करेंगे और कोरस के रूप में भी सामने आएँगे।)

एक प्रतिष्ठित मागुन की मढ़ैया। कमरे में भाँडों के साज-सामान की गठरियाँ और बक्से आदि यहाँ -वहाँ रखे हुए है। दीवरों पर लाइटों के स्टैंड, सोटियाँ, ढोल,नगाड़े आदि टँगे है। मढ़ैया में एक ओर प्रवेश करने का दरवाज़ा है और दूसरी ओर एक खिड़की। खिड़की से कुछ हट कर रसोई के कमरे में जाने का द्वार है। कमरे के एक कोने में घर की कुछ चीजों के साथ एक ट्रांजिस्टर रखा हुआ है।

सारा रंगकार्य इसी मढ़ैया में संपन्न होता है। मागुन बैठा रेडियो पर समाचार सुन रहा दिखाई देता है। रेडियो समाचार (ध्वनि) : हम बड़े दुःख के साथ यह ख़बर दे रहे हैं कि लोकमंच की प्रसिद्ध अभिनेत्री शमीमा परवीन उर्फ़ गुपाली की गला घोंट कर हत्या कर दी गई है। उस की लाश श्रीनगर में एक सड़क के किनारे पड़ी मिली, जहाँ अज्ञात आंतकवादी उसे फेंक आए थे।.... (रेडियो पर समाचार चलते रहते हैं)

मागुन : बड़े अफ़सोस की बात है। समझो अब हमारी कला गई। अब तो भाँडों के काम पर भी इन की ललचाई नज़र पड़ गई है। अरे सुनते हो, नुंदा?
(नुंदा रसोई के कमरे से आ कर एकाएक रेडियो बंद कर देता है।)
नुंदा : क्या बात है, बाबा? किसलिए आवाज़ दी?

1. पक्की मिट्टी का बना कश्मीरी लोकवाद्य

मागुन : सुना नहीं? शमीमा का गला घोंट दिया गया!

नुंदा : (आश्चर्य से) अच्छा? पर तुम इतने घबराए हुए क्यों हो?

मागुन : *(बेचैनी-सी अनुभव करते हुए)* हाँ, मैं घबरा गया हूँ, परेशान हूँ, सोच में पड़ गया हूँ। कोई सहे तो कितना? *(आँखों में आँसू आ जाते हैं)*

नुंदा : आजकल तो यह चलता ही रहता है, बाबा! कोई अगर तहरीक को नुकसान पहुंचाए तो उस का अंजाम यही तो होगा।

मागुन : चुप रह! किसी कलाकार को सरे राह मार डालना — यह भी कोई तहरीक है भला? हराम के पैसों और मुफ्त के हथयारों ने तुम लोगों की तो बुद्धि ही बिगाड़ दी है। मरोगे तुम लोग भी कुत्तों की मौत, पर तब तक यह पुश्तैनी धंधा ही बाकी नहीं रहेगा।

नुंदा : चिल्ला कर मत बोलो, बाबा! कहीं मेरे ए. सी.[1] ने सुन लिया तो अभी जान से मार डालेगा।

मागुन : अबे सुनता है तो सुन ले। मरना तो है ही एक न एक दिन, आज ही मरेंगे।

नुंदा : *(जाते हुए)* ऐसे खुदगरज़ मता बनो, बाबा! और भी तो लोग रहते हैं इस घर में तुम्हारे अलावा। वे क्यों मरें? चुप करके बैठे रहो अपने, शाम का वक्त हो चुका है।

मागुन : हाँ, वक्त काफ़ी हो चुका है। चौथा साल है यह मुँह बंद किए हुए। पर अब कुछ न कुछ करना होगा।

(नुंदा अंदर के कमरे में जाता है और दो बंदूकें ले कर निकलता है। एक बंदूक वह कंधे पर रख लेता है, एक हाथ में।)

नुंदा : गुपाली ने मुख़बिरी की थी, उसी का अंजाम उस ने पाया- गला घोंटे जाने से मरी!

मागुन : गलत! गुपाली नहीं मरती! प्रेमी गुसाईं[2] उस के दर्शन करके आकाश मार्ग से चला जाता है। गुपाली उसे ठौर-ठौर ढूँढ़ती फिरती है।

नुंदा : अब नहीं ढूँढ़ेगी! बैठो अपने चुप करके। बेकार में उछल-कूद मत करो।

(बाहर जाने लगता है)

1. एरिया कमांडर — आतंकवादी गिरोह का सरगना
2. प्रेमी गुसाईं शीर्षक लोकप्रिय स्वाँग का प्रमुख पात्र

मागुन : नहीं, मैं चुप करके नहीं बैठूँगा। मैं अभी जमा करूँगा अपने सभी भाँडों, मसखरों, साज़िन्दों और बाक़ी तमाम लोगों को। अब तो कोई न कोई उपाय करना ही होगा। हौसले को मज़बूत करना होगा। वरना अपनी सारी कला को गँवा देंगे। खो बैठेंगे वह सब जो हासिल किया है।

(नुंदा पलट कर आता है)

नुंदा : कहीं बावरे तो नहीं हो गए हो, बाबा?

मागुन : बावरा ही समझो। बहुत से मत के मारे कला को बावरापन समझते हैं। तू भी उन में से एक है। चल हट मेरे सामने से, नासपिटे! बंदूकिए!

नुंदा : माँ, माँ! बाबा पर बावरापन सवार है। जानते नहीं कि ये लोग देखते-देखते गोली से उड़ा सकते हैं।

मागुन : *(गुस्से में)* अबे जा, दूर हो जा यहाँ से। जा अपने इन सारे हथियारों को लेकर। जाकर इन्हें दरिया में फेंक आ!

(मागुन की पत्नी ऊँचे-ऊँचे स्वर में उन की बातें सुन कर रसोई के कमरे से घबराई हुई आती है)

भाँडिन : अरे-अरे यों चिल्ला क्यों रहे हो? बेटे से किस बात पर झगड़ रहे हो? अगर कहीं वो अपना आपा खो बैठे और बंदूक उठा ले तो जाने क्या कर बैठेगा!

मागुन : गोली मार देगा, यही न? मर जाऊँगा। जब गुपाली ने इतनी जुर्रत दिखाई, तो मैं क्यों पीछे रहूँ? हथियार देख कर क्यों खौफ़ खाऊँ?

नुंदा : बाबा पर जुनून सवार है, माँ सारा गाँव खिड़कियाँ और दरवाज़े बंद किए चुप बैठा है, और इन्हें प्रेम का दर्द सता रहा है! *(जाते-जाते)* अपने आप को मौत के हवाले करने की सूझी है।

(धड़ाक से दरवाज़ा बंद करके चला जाता है)

मागुन : अरी पकड़ मत, छोड़ मुझे! जा और मेरा नगाड़ा ला दे।

भाँडिन : नगाड़ा? सिरहाने रखना है क्या?

मागुन : चार साल से सिरहाने ही तो रखते आये हैं। पर अब नहीं- अब उसे बजाना है और उस की धूल झाड़नी है!

भाँडिन : *(छाती पीट कर)* हाय, यह क्या कह रहे हो? बैठे-बैठाए क्यों मुसीबत को घर बुला रहे हो?

मागुन : तुम से किसी ने इस के बारे में सोचने को नहीं कहा। गुपाली को तो शहर में बीच रास्ते पर गला घोंट दिया गया था!

(झटके से उठता है और खूँटी पर से अपना नगाड़ा उतार लाता है। फिर सोटी उठा कर उसे बजाने लगता है। पत्नी के साथ उस की छीना- झपटी हो जाती है।)

भाँडिन : इसे एक तरफ़ को रख दो?

मागुन : किस तरफ़ को?

भाँडिन : खुदा की क़सम बहुत ला परवाही कर रहे हो। अभी आ धमकेंग वो, क्या कहते हैं उन्हें... मुजाहिद, और गोलियाँ बरसाएँगे।

मागुन : तो तू भी डरती है इन बेशऊर धायँ-धायँ करने वालों से!

भाँडिन : अपनी जान का किसे डर नहीं?

मागुन : जान तो जन्म लेते ही अपने बस में नहीं रहती, फिर मरने से क्या डरना? छोड़, मुझे आवाज़ लगाने दे!

भाँडिन : कौन चला आएगा तुम्हारे बुलाने पर? कौन खेलेगा अपनी जान से?

मागुन : खेल जारी रहेगा। चार साल के बाद यह पहला बुलावा है। देखना अभी चले आएँगे सब के सब -मेरे भाँड, कलाकार, मसखरे, साज़िन्दे!

(भाँडिन खिड़की तक जाती है और फिर लौट आती है)

भाँडिन : सभी बैठे हैं अपने-अपने घर में, खिड़कियाँ-दरवाज़े सब बंद किए। यहाँ कौन आएगा?

मागुन : *(नगाड़े पर चोट करते हुए)* आवाज़ सुनते ही सभी चले आएँगे। *(मागुन खिड़की के पास जा कर नगाड़ा बजाता है। भाँडिन दरवाज़े पर जाती है और कहती है-)*

भाँडिन : जाने क्या देखना बदा है? चला गया तुम्हारा इकलोता बेटा घर छोड़ कर!

मागुन : जाने दो उसे! बदूकिया हरामखोर!

भाँडिन : बंद करो नगाड़ा बजाना! कहीं उसे मार न डालें। *(मागुन नगाड़ा बजाना बंद करके पीछे मुड़ कर देखता है)*

मागुन : मार डालें! अब तो मौत ही में उस का छुटकारा है- गुमराह होने से, पुशतैनी काम-धंधा छोड़ने से, बुरे-बुरे कामों में लगने से, बुरे चाल- चलन से छुटकारा!

भाँडिन : *(रोती है)* तुम्हारे भीतर से जैसे काल बोल रहा है- बसे-बसाए घर को मेरे उजाड़ कर दम लोगे! *(भाँडिन बाहर दरवाज़े पर जाती है। फिर कुछ क्षण बाद किसी के आने की आहट पहचान कर वापस आ जाती है। मागुन खिड़की के पास खड़ा रह कर फिर से नगाड़ा बजाना शुरू करता है।)*

भाँडिन : रहने भी दो अब नगाड़ा बजाना।आ गए तो तुम्हारे हमजोली, किस्से गढ़ने वाले भाँड! अब जो जी में आए करो। तुम तो अपने बाल-बच्चों को मरवा कर ही मानोगे। *(रूठ कर एक ओर जा कर बैठ जाती है। मागुन गंभीरता से नगाड़ा बजाने लगता है। तभी भाँड कलाकार एक-एक करके अंदर आते हैं। सभी हैरान से दिखाई देते हैं।)*

एक भाँड : अस्सलाम अलैकुम! किसलिए बुलाया है! सब ठीक-ठाक तो है न?

मम्मा मसखरा : सलाम भाँडिन! अरे, यहाँ सब चुप-चाप क्यों हैं? कहीं घर में कोई खटपट तो नहीं हुई जो आस-पड़ोस के भाँडों को बुलाया? *(भाँडिन उठ कर खड़ी हो जाती है। वह कुछ चिन्तित-सी दिखाई देती है)*

भाँडिन : *(जले-भुने स्वर में)* तुम्हारे इस मागुन को जुनून चढ़ा है बावरापन सवार है इस पर! इसे सँभालो! *(बाहर चली जाती है। मागुन नगाड़ा बजाना बंद करके पीछे मुड़ कर देखता है। फिर नगाड़ा खिड़की के पास रख देता है।)*

एक अन्य भाँड : क्यों जी, किसलिए बुलाया? अब तो नगाड़े की आवाज़ भूल ही गई है। खैरियत तो है?

मागुन : अरे यह तुम लोग पूछ रहे हो? रेडियो पर खबर नहीं सुनी?

मम्मा मसख़रा : कौन-सी ख़बर?

मागुन : शमीमा यानि गुपाली की शहर में गला घोंट कर हत्या कर दी गई है।

मम्मा मसखरा : हाय-हाय यह तो अफ़सोस की बात है।

दूसरा भाँड : अफ़सोस! बहुत अफ़सोस! तौबा तौबा!

मागुन : उस की लाश सड़क पर फेंक दी गई थी-बिलकुल नंगी!

अन्य : ओह-ओह बेगुनाह और बेमौत मारी गई बेचारी!

मागुन : लाश की शिनाख़्त कर ली गई है!

वाद्यकार : अब हम क्या करें?

मागुन : क्या करना चाहिए हमें? सोच कर बताओ!

वाद्यकार : अब हम क्या करें?

मागुन : क्या करना चाहिए हमें? सोच कर बताओ!

वाद्यकार : मातम!

कमाल शेर : हम मातमी इजलास[1] बुलाएँगे!

वाद्यकार : मतलब?

मागुन : (सब की ओर से संबोधन कर) आज उसे मारा। कल मुझे मोरेंगे। फिर तुम्हें-तुम्हें। एक-एक कर के सब को! और फिर कोई मातम करने के लिए भी नहीं रहेगा! क्योंकि.. (चुप्पी)... क्योंकि ... हम सब चुप हो गए हैं। सब का मुँह बंद है। आवाज़ बंद है। उधर जल्लाद पगला रहे हैं! हमारे लोकमंच की, परंपरा की जड़ें खोद डालने के लिए, हमारी संस्कृति को मिटाने, हमारे वजूद को नष्ट करने के लिए! इसलिए... *(चुप्पी)*

मम्मा मसख़रा : इसलिए क्या?

मागुन : इसलिए हमें चुप्पी को तोड़ना होगा!

कमाल शेर : और चुप्पी तोड़ने के लिए हमें क्या करना होगा?

1. शोक–सभा

मागुन : *(गंभीरता से)* स्वाँग, भाँड जश्न, नाटक!

मम्मा मसख़रा : मगर लोग कहाँ जमा होंगे? किस जगह? है कोई मुक़ाम जहाँ डर न हो, त्रास न हो? एक तरफ़ नक़ाबपोश हैं और दूसरी तरफ़ वर्दीपोश।

मागुन : हम घर पर जश्न करेंगे- यहाँ, इसी वक़्त!

अन्य : यहाँ?

कमाल शेर : यह बात तो पल्ले नहीं पड़ी, मागुन साहब!

मागुन : हम अपना सब कुछ भुला बैठे हैं। क्या ऐसे वक़्त पहले जमाने में नहीं आए हैं? बताओ, क्या ज़िन्दगी में हम ने कभी अपने लिए जश्न किया है? ख़ालिस अपने लिए, मन से, विश्वास से? बोलो।

मम्मा मसख़रा : कभी तो नहीं।

मागुन : तो आज क्यों न करें? अभी-इसी वक़्त! शायद हमारे गुनाह माफ़ हों।

मम्मा मसखरा : रात के वक़्त शहनाई बजाएँ! ढोल-नगाडे बजाएँ। जबकि लोग गोलियों के डर से घरों के अंदर दुबके बैठे हैं? यह कौन-सी अक़्लमंदी है, मागुन साहब?

मागुन : डरपोको! तुम लोग अपना फर्ज़ भूल गए हो। आतश और कातश भाँड ने भी तो अपने लिए स्वाँग किया था। तभी तो नुंद ऋषि[1] ने कहा है-

(ऊँचे स्वर में नुंद ऋषि का पद गाता है)

आतश भाँड समय का अपने था दबंग जो ठैला
किया रात भर जश्न, स्वाँग था उस ने भी तो खेला।
जीते-जी आकाश चढ़ा वह-प्रभु से माँग लिया वर
वैसा ही वर दे देना मुझ को भी तुम, हे ईश्वर!

मम्मा मसख़रा : मगर आतश और कातश तो खुदा-दोस्त बंदे थे।

मागुन : *(जैसे भावावेश में आ कर)* उन्होंने सच्चे मन से माँगा और श्रद्धा और विश्वास के बल पर जीते-जी आकाश में उठ गए। गुण तो माँगने में है, भाई तो फिर बजाओ तुम भी

1. शेख नूरुद्दीन

साज़। सामान की पोटलियों की गाँठें खोल दो। भेस बदलो और वस्त्र पहन लो। कर लो स्वाँग शुरू!

कमाल शेर : मम्मा, आज हमारे रसूल मागुन किसी दूसरे ही मूड में हैं! चलो, इन्हीं का दिल रखते है। यहाँ हम घर के अंदर हैं और खिड़ाकियाँ-दरवाज़े भी सब बंद है। फिर हमें कौन-सा हुड़दंग मचाना है जो कोई हम पर इल्ज़ाम लगाए; और यहाँ आएगा भी कौन?

(भाँडिन झटके से दरवाज़ा खोल कर अंदर आती है)

भाँडिन : *(मागुन से ऊँचे स्वर में)* सुनो, नुंदा, हमारा इकलौता बेटा, सब में घर छोड़ कर चला गया है। साथ में अपनी सभी बंदूकें सारे हथियार भी ले गया है।

मागुन : गया है तो जाए। अच्छा हुआ जो गया। नींद हराम कर रखी थी कमबख़्त ने! अगर कहीं वर्दीपोश हथियारों की तलाशी लेने आते तो मकान को ईट-ईंट करके गिरा देते। जीते-जी झोंक देते भट्टी में।

भाँडिन : कहीं कोई उस की घात में न बैठा हो

मागुन : किसे पता है? नासपिटा बहकावे में आ गया था उन के। गया तो अच्छा ही हुआ।

भाँडिन : मगर गया वो तुम्हारी ही खातिर! कह गया है इस घर की रखवाली करूँगा, पूरे भाँडपुरे की रखवाली करूँगा, बाबा की और बाबा की विरासत की रखवाली करूँगा।

मागुन : मुझे तो विश्वास नहीं होता। वो तो अपने एरिया कमांडर के नाखून तले दबा है। जैसा वो कहेगा, वैसा ही करेगा।

मम्मा : हथियारों की धौंस दिखा कर लोगों को दहशत में रखते हैं ये तो।

कमाल शेर : दहशतगर्दी के कैसे-कैसे हथकंडे हैं!

भाँडिन : *(भर्राए गले से)* लगता है यहाँ लोग पुत्र का मोल ही भूल गए हैं। वही जाने जो पुत्र के दुःख में तड़पता है। कितने ही मासूम और जवान तो मारे जा रहे हैं।

कमाल शेर : तो फिर हम एकनंदुन[1] का स्वाँग क्यों ने करें? पुत्र की लालसा, पुत्र का मोल क्या है- यह लोगों को समझाएँ।

1. कश्मीरी लोक कथा 'अकनंदुन' पर आधारित स्वाँग

मम्मा मसखरा : मगर रानी बना करती थी शमीमा और वो बेचारी मारी गई।

मागुन : अरे, जिस का जी चाहे रानी बने। यह स्वाँग हमारी तरफ़ से शमीमा को श्रद्धा की भेंट होगी।

कमाल शेर: पर सवाल है कि रानी कौन बनेगा। उस में आख़िर कोई योग्यता भी तो होनी चाहिए।

मम्मा मसखरा : पहले शमीमा बना करती थी या फिर नुंद लाला।

कमाल शेर : और इस वक़्त रानी की भूमिका कौन करेगा?

भाँडिन : *(गंभीरता से)* अब की बार मैं बनूँगी रानी? *(सभी आश्चर्य से उस की ओर देखने लगते हैं)*

मागुन : *(आश्चर्य से)* तू करेगी रानी का पार्ट? तू?

भाँडिन : हाँ, मैं। तीस साल से इसी मड़ैया में तो रिहर्सल करते आ रहे हो। फिर कैसे नहीं होगा मुझे यह पार्ट याद? घर छोड़ कर जश्न करने नहीं गई हूँ।

मम्मा मसखराः शमीमा जो संवाद बोलती थी, जो पार्ट करती, वह सारा का सारा याद है?

भाँडिन : हाँ, एक-एक लफ़्ज़। वैसे ही जैसे यह कि कल रात क्या पका था? *(मागुन, जो भाँडिन को एकटक देख रहा होता है, पास जाकर उस के कंधे पर हाथ रखता है।)*

मागुन : ताज्जुब है! सच में तू रानी का पार्ट करेगी?

भाँडिन : इस में ताज्जुब की क्या बात है? अभी दिखाऊँ कर के?

मागुन : शमीमा ने रानी का पार्ट गाँव-गाँव में, शहर में, जम्मू और शिमला में कर के दिखाया है और दर्शकों से शाबाशी पाई है। तू वैसा कर सकेगी?

भाँडिन : उस ने रानी का पार्ट किया लोगों को दिखाने के लिए। मैं करूँगी तुम्हारे लिए- सिर्फ़ तुम्हारे लिए। जान भी देनी पड़े तुम्हारे लिए तो उफ़ न करूँगी।

मागुन : वाह, क्या खूब! तब फिर हो जाए शुरू! वक्त का कोई भरोसा नहीं।

मम्मा मसखरा : कलाकारों के शहंशाह रसूल मागुन के साथ रानी की भूमिका में होगी उस की अपने घर की रानी। क्या बात है! अब किस बात की देर है! स्वाँग करने वाले भी हम और देखने वाले भी हम। चलो, शुरू कर ही लेते हैं।

(मायुन, कमाल शेर और मम्मा मसखरा अंदर वाले कमरे में जाते हैं। वादक शहनाई, ढोल और नगाड़ा बजाना शुरू करते हैं। मंच के एक छोर पर नटुवे राजदरबार का दृश्य तैयार करते हैं। उन में से सात लड़कियों के वेश में आते हैं और मंच पर नाचने लगते हैं। यही नटुवे कोरस के रूप में गाते भी हैं।)

कोरस तथा नृत्य: चाहें री, हम तो चाहें री, एक नन्हा-सा भैया चाहें री!
दे दे एक नन्हा-सा भाई, दाता हम ने आस लगाई
खेलें री, हम तो खेलें री, हम तो नन्हें-से भैया से खेलें री!
नाचें री, हम तो नाचें री, हम तो आशा-उमंग भरी नाचें री
माँगें री, हम तो माँगें री, हम तो सच्चे हृदय से माँगे री
नवाएँ री, सिरै नवाएँ री, हम तो दाता के आगे सिर नवाएँ री
दे दे एक नन्हा-सा भई, दाता, हम ने आस लगाई
माँगे री, हम तो माँगे री, हम तो सातों बहनें माँगे री!
(गाना और नाचना चल ही रहा होता है कि दो नटुवे एक परदा लिए आते हैं और नचैयों के पीछे जा कर खड़े हो जाते हैं। परदे के पीछे से एक घंटे के बजने की आवाज़ सुनाई देती है। कमाल शेर राजा के वेश में आता है और एक स्टूल पर जा कर ऐसे बैठता है जैसे कि वह सिंहासन हो। अन्य भाँड शेष पात्रों की भूमिका में।)

कमाल शेर : यह कौन न्याय का घंटा बजा रहा है?

(द्वारपाल बना एक मसखरा प्रवेश करता है)

द्वारपाल : राजन्! कोई फ़रियादी द्वार पर खड़ा है।

कमाल शेर : कौन है यह फ़रयादी?

द्वारपाल : महाराज, वह जीभ कहाँ से लाऊँ, जो बताऊँ। हिम्मत नहीं पड़ती।

कमाल शेर : साफ़-साफ़ बताओ, फ़रयादी कौन है?

द्वारपाल : राजमहल की शोभा, हमारी महारानी दुहाई देने आई है।

कमाल शेर : *(चौंक कर)* क्या? फ़रयादी बन कर न्याय का घंटा बजा रही है? हैरानी की बात है। उन्हें आदर और सम्मान के साथ दरबार में लाया जाए।

(परदा लिए हुए दो नटुवे तनिक आगे आते हैं और परदे को थोड़ा नीचे उतारते है। परदे के पीछे से रानी का आधा शरीर दिखाई देता है।)

कमाल शेर : महारानी!

भाँडिन : *(परदे के ऊपर से दोनों हाथ पसारते हुए)* महाराज, दुहाई है!

कमाल शेर : हम बहुत लज्जित है आप को फ़रयादी के रूप में देख कर! ज़रूर हम से कोई भूल हुई है, कोई चूक। कहिए, आप किसलिए दुहाई दे रही हैं?

भाँडिन : जब मन में अशांति हो, आँखों से नींद उड़ गई हो, दिन-रात आँसुओं की झड़ी लगी हो, ओंठों पर आहें और उसाँसें हों और हृदय को बस एक ही लालसा तड़पा रही हो- पुत्र की लालसा, पुत्र की भूख- तब रानी भी दुहाई माँगने आती है, झोली फैलाती है।

(नटुवे परदा ले कर चले जाते हैं। भाँडिन कमाल शेर के आगे घुटनों के बल झुकती है)

भाँडिन : मुझे बस एक पुत्र चाहिए, एक बेटा!

कमाल शेर : पुत्र की लालसा? पुत्र की भूख? फ़रयादी, पुत्र का दान राजा के बस की बात नहीं। राजा आप भी इसी दुःख का मारा है। यह दोनों का साझा दुःख है।

भाँडिन : सात बेटियाँ सात राजकुमारों के साथ सात दिशाओं में चली जाएँगीं तब हमारे इस राज्य को कौन सँभालेगा?

कमाल शेर : यही सवाल तो अंदर-अंदर से मुझे भी कुरेद रहा है, महारानी!

भाँडिन : यौवन के ये आख़िरी बरस भी अगर बीत गए और पुत्र की भूख शांत न हुई तो क्या मैं दुःख के मारे मर न जाऊँगी?

कमाल शेर : धीरज रखें। ईश्वर हमारी भी मनोकामना पूरी करेगा।

भाँडिन : जिन माता-पिता के पुत्र न हो कौन उन का मरने के बाद तर्पण करेगा? कौन उन के लिए देहरी पर दिया जलाएगा?

कमाल शेर : हाय, जिन माता-पिता के पुत्र न हो, कौन उन्हें वैतरणी के पार उतारेगा?

भाँडिन : कुल के संस्कारों का अधिकारी होता है पुत्र।

कमाल शेर : संस्कार संस्कृति का सार है। पुत्र संस्कृति का रक्षक होता है?
(भाँडिन और कमाल शेर दोनों उठ कर खड़े होते हैं)

कमाल शेर : हमारा दुःख एक ही है, एक ही है हमारी भूख- पुत्र की भूख। देखो महारानी, मैं अपना यह मुकुट, अपनी यह पगड़ी इस सिंहासन पर रखता हूँ और तुम्हारे साथ दुहाई माँगने चलता हूँ।
(मुकुट उतार कर सिंहासन पर रखता है और रानी का हाथ पकड़ता है)

कमाल शेर : चलो, अभी भी अगर कोई साधु-संत, कोई जोगी, फ़कीर बचा हो तो उस के पास चल कर मन्नत माँगते हैं। मंदिरों, देवस्थानों, पवित्र जलकुंडों, पवित्र पेड़ों के आगे दिए जलाते हैं। पवित्र स्थानों में चीथड़े बाँध कर मनौतियाँ माँगते हैं। शायद ईश्वर हमारी भी सुन ले।
(दोनों मंच पर चक्कर लगा कर अंदर वाले कमरे की ओर जाने लगते हैं)

दोनों : प्रभु सब से बड़ा मुकुटधारी
करता वह सब की रखवारी
वह दयावान है वह दाता
है वही सहायक वह त्राता
(संगीत की धुन बदलती है और लड़कियों का दल मंगल-गीत गाता और लड़कियों की-सी नृत्य-क्रीड़ा करता है)

लड़कियाँ : माँ तीरथ-तीरथ जाए तो बापू पूजे देवल
हाँ-हाँ बापू पूजे देवल
एक पुत्र दो हम को दाता-एक पुत्र दो केवल
हाँ-हाँ एक पुत्र दो केवल
सच्चे मन से ओ रखवैया हम माँगें नन्हा-सा भैया
सुन ले दैया भेजे भैया
सुन ले दैया भेजे भैया

हँसने और हँसाने को, शोभा नित्य बढ़ाने को, शोभा नित्य बढ़ाने को, शोभा नित्य बढ़ाने को।
(गाना और नृत्य समाप्त होता है। संगीत की धुन बदलती है और साधु के वेश में मागुन प्रवेश करता है।)

मागुन : बम भोले अलख जगाए! आया हूँ मैं जोगी राजा के आँगन में! जानता हूँ क्या है राजा और रानी के मन में: एक पुत्र हो राज सिंहासन का अधिकारी, दूर करे जो मन की निराशा सारी। राजमहल को जो महकती फुलवारी बना दे। मन के सरोवर में कमल खिला दे।
(एक मसख़रा उछलता हुआ आता है।)

मम्मा मसख़रा : हा-हा-हा! जोगी, सचमुच के पहुँचे हुए हो या राजा-रानी के घावों को यों ही कुरेदने के लिए आए हो?

मागुन : बम भोलेनाथ की! ज़बान सँभालकर बात कर वे मसख़रे। तू नहीं जानता है कुछ भी सिरफिरे। फिर अगर ऐसे ही बोला,रे गँवार। कुल्हाड़ी से करूँगा तुझ पर वार!

मसख़रा : हिश्श! चुप करो! न यहाँ पर राजा है और न है यह तुम्हारा घर। एक मसख़रा है बस जो कूद-फाँद कर रहा है यहाँ परं एक पाँव इधर है तो दूसरा उधर। पाया है तुम ने थोड़ा ज्ञान? खुली है क्या नज़र?

मागुन : अरे ओ बेख़बर! रोंगटे खड़े हो जाएँगे, जब कर दूँगा ज़बान बंद। आँखों के आगे छा जाएगा अँधेरा, घुटने कापेंगे थर थर! तू है मदहोश, न पाई है दृष्टि और न ज्ञान। बस यों ही चला रहा है ज़बान। कौन हूँ मैं यह तू क्या सकेगा पहचान!

मसख़रा : हो शायद कोई हरमुख के गुसाईं[1], सुबह पहाड़ पर चढ़ना। शुरू करके शाम वहीं पहुँच जाने वाले जहाँ से शुरू की थी चढ़ाई!

मागुन : लगता है गिनी-चुनी है तेरी साँसें। मसख़री छोड़ और ईश्वर का ध्यान कर। रानी यहाँ नहीं अगर तो चलता हूँ मैं वापस!
(रानी के वेश में भाँडिन घबराई हुई-सी आती है)

मसख़रा : नहीं महाराज, नहीं। वापस तो हरगिज़ मत जाओ। लो, वो रानी चली आई। देखो, कैसे उस ने अपनी झोली फैलाई।

1. एक कश्मीरी दंतकथ के अनुसार एक साधु हर दिन सुबह हरमुख पहाड़ पर चढ़ना शुरू करता था और शाम को फिर अपने स्थान पर वापस पहुँच जाता था।

भौंडिन : महाराज, तनिक अपने चरण टिकाएँ। यह मसखरा नादान है, इस की बातों पर मत जाँए। क्षमा करें इसे, दया करें मुझ पर। सामने आसन रखा है, विराजें उस पर।

मागुन : बोल रानी, वचन देगी?

भौंडिन : कैसा वचन, महराज?

मागुन : मैं तुझे पुत्र दूँगा, रानी। नौ मास बाद तू उसे गोद में खिलाएगी। लेकिन...

भौंडिन : लेकिन क्या, महाराज?

मागुन : बारह बरस बाद उसे वापस लेने आऊँगा। वचन दे कि वापस देगी उसे। बोल, देती है वचन?

भौंडिन : सच कहते हैं, महाराज? आपक की कृपा से मुझे पुत्र होगा? *(उदास होते हुए)* पर यह वचन कैसा?
देंगे अगर पुत्र तो बारह बरस बाद वापस ले जाएँगे?

मागुन : हाँ, बारह बरस बाद आऊँगा और उसे वापस ले जाऊँगा।

भौंडिन : बारह बरस! हे भेगवान! बारह बरस तक बच्चे के किलकारियाँ मारने के दिन होते है। संगी-साथियों के साथ छुपन-छपाई खेलने के दिन। सहपाठियों के साथ बैठ कर अक्षर ज्ञान करने के दिन। बारह बरस तो उस के आगे-पीछे ही डोलती फिरूँगी उस का मुख निहारती हुई- फिर मेरे कौन से अरमान पूरे होंगे? बारह बरस देखूँगी पुत्र की बाल लीला और आप आ कर उसे ले जाएँगे! यह कैसी दया है? कैसा दान? मैं मानिनी तो ऐसे पुत्र के लिए विकल हूँ जो बलवीर बनेगा, घर बसाएगा, राज-काज का सुख भोगेगा, नाम कमाएगा, वंश चलाएगा। बारह बरस तो उसे किलकारियों में ही बीत जाएँगे। बारह बरसों में वह कितना कुछ पाएगा?

मागुन : अच्छा! विधाता अगर उसी ढंग से चलने लगे जिस ढंग से हम उसे चलाना चाहें तो जिस ने जनम लिया है वह कभी मरेगा ही नहीं। लेकिन काल अटल है। समझी?
(ऊँचे स्वर में यह पद गाता है-)

एक जो न जनमता और एक जो न मरता
दुनिया तंग पड़ जाती, कौन कहाँ रहता?
एक जो न आता और एक जो न जाता
चक्की रुक जाती यह, कौन क्या खाता?

भौंडिन : जोगीराज, मैं पड़ती हूँ पाँव, मौत का मत लें नाँव। या मुझे इस दुनिया से इसी छिन उठा लें, या फिर करें दया - मुझे बस एक पुत्र का वर दें। मेरे मन की अभिलाषा पूरी कर दें।

मागुन : दूँगा, पर सिर्फ बारह बरस के लिए । ले और गोद में खेल, खिला-पिला। घुमा-फिरा। बारह बरस के बाद आऊँगा और उसे ले जाऊँगा। कह, देगी वचन?

भौंडिन : मुझ से वचन मत माँगे। सात बेटियाँ हैं, जिसे माँगेंगे, दूँगी । पर कृपा कर के एक पुत्र से मेरी गोद भरें।

मागुन : क्या करूँगा तेरी बेटियाँ ले कर। उन का अपना-अपना भाग्य है। मुझे बस तेरा वचन चाहिए। बोल देगी? अब भी सोच ले। बारह बरस के बाद आऊँगा और उसे वापस ले जाऊँगा। बता?

भौंडिन : पुत्र जो देंगे तो वापस क्यों लेंगे भला? बारह बरस का यह वचन क्योंकर? समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ? जीभ अटक जाती है। जोगियों की बातें समझ में नहीं आती है। हे जोगी दयावान, दया करें, दया!

मागुन : सुन री ओ रानी! मेरे मन में दया उपजाने की क्यों है तूने ठानी? देख चुका हूँ मैं यह संसार, यह है पूरा असार। यहाँ नहीं है किसी को रहना। फिर क्यों फंसाती है अपने आप को मायाजाल में? वचन दे तो मैं चला जाऊँ। बारह बरस के लिए जो पुत्र चाहिए तो मैं अभी बुला लेता हूँ उसे। नौ महीने बाद तेरी गोद भर जाएगी। नाम रखना उस का एकनंदुन।

भौंडिन : *(धीरे-धीरे खुश होते हुए)* हाँ-आँ-आँ एकनंदुन ठीक रहेगा बारह बरस बाद क्या होगा, किस ने देखा है? ठीक है, दे दे मुझे मेरा बेटा ... मेरा एकनंदुन!

भौंडिन : वाह! तो ले ही लिया मैं ने तुझ से तेरा वचन! आखिर फंस गई, डोल गया तेरा मन! बम भोलेननाथ की!

(जाता है और अंदर वाले कमरे में प्रवेश करता है। परदे के पीछे से सात लड़कियाँ थालियों में जलते दिए लिए आती हैं। परदा पीछे को सरकता है। हाथों में थालियाँ लिए लड़कियाँ माँ के इर्द-गिर्द नाचती हैं। परदा भाँडिन को ओट में कर लेता है । लड़कियाँ नाचती हुई सुलभ क्रीड़ा करती रहती हैं। थालियाँ नीचे रख कर वे एक-दूसरे के हाथ पकड़ कर नाचने लगती हैं।)

कोरस और नृत्य गीत: थाली भरी है यह वसंत[1] की, भैया के देखने के लिए
थाली भरी है यह सोने की, भैया के देखने के लिए
थानी भरी है यह चाँदी की, भैया के देखने के लिए

मंगल गीत : सातों बहनें चली हैं हम तो हँसती गार्ती-गार्ती
जिस माँ ने है जना एकनंदुन उस की बलि जार्ती।

अल्पना गीत : थाली भरी है यह भात से, कह दो किस के लिए
थाली भरी है यह बापू के लिए , और किस के लिए
थाली भरी है यह खीर से, कह दो री किस के लिए
थाली भरी है यह भैया के लिए, और किस के लिए
भैया यह किस ने दिया री, कह दो री किस ने दिया
भैया दिया है जोगीराज ने, जागी ने भैया दिया
जोगी यह किस वन का है री, कह दो री किस वन का
जोगी तपोवन का है री, जोगी है तपोवन का
गुसाईं आए हमरे घर
रहते हर मुख में- हर-हर!
या फिर अमरेश्वर में रे
ओमू नमो जगदीश्वर रे!
तोरे अंगों में चंदन लगाएँ, कह दे कौन- सी दीदी बलि जाए
ओरे-ओरे हमारे अक-नंदुना! कह दे कौन-सी दीदी बलि जाए
बहनों के संग हँसे-हँसाए, बहनों के संग खेले-खिलाए
ओरे-ओरे हमारे अक-नंदुना! कह दे कौन-सी बहना बलि जाए

1. वसंत के त्योहार की पूर्व-संध्या पर कश्मीरी हिन्दुओं में एक थाली में चावल, फूल, स्याही की दवात, कलम, दर्पण, मिश्री की डली, दही आदि सजा कर रखने की प्रथा है। प्रातः उठते ही इस थाली को देखना शुभ माना जाता है।

(कोरस का प्रस्थान! संगीत की लय बदलती है। साधु के वेश में परदे के पीछे छिपा मागुन धीरे-धीरे उठ कर खड़ा होता है। पहले उस का केवल मूँह दिखाई देता है। वह मंच के चक्कर लगाता है।)

मागुन : *(अपने-आप से)* मोह-माया के जाल में भूले हुए हैं सब लोग। बारह वसंतों का रस लूट कर गंध में डूबे हुए। संसार की ऐसी न जाने कौन-सी जड़ी-बूटी सूँघ ली है इन्होंने कि मुझे दिया वचन याद ही नहीं। अकनंदुन की किलकारियों में ही सब कुछ भूलाए बैठे हैं। अभी जा कर पुकारता हूँ और देखता हूँ क्या कहते हैं भला। *(परदे के बाहर आता है और मंच के चार चक्कर लगा कर आवाज़ देता है)*

मागुन : *(ऊँचे स्वर में)* बम भोले नाथ की! आया मैं जोगी राजमहल के अंदर। बारह बरस पहले का वचन रानी को याद दिलाना है। लगता है उसे वचन का पालन करना सिखलाना है। *(पुकारता है)* कहाँ है तू महारानी? *(दूर से मसखरा दौड़ा-दौड़ा आता है और दाएँ-बाएँ देखता हुआ उसे बातों में उलझाता है)*

मसखरा : अरे ये वही पहले वाला गुसाईं है या कोई रसिक? किस वन से आए हो रे जोगी! आँगन कैसे पार किया? बैठक में कैसे पहुँचे? घुसे किस दरवाज़े से?

मागुन : ओ मसख़रे, मूरख-अज्ञानी! कुछ जानता भी है या मेरी चमत्कारी शक्ती की परीच्छा लेने की है तूने ठानी?
या फिर बनता है जान कर अनजान? अच्छा रानी कहाँ है बता! छिप कर बैठी होगी कहीं सरहदों के पार।
(जोगी की आवाज़ सुन कर रानी भागी-भागी आती है)

भाँडिन : जोगी मस्तावे! कहीं तुम्हें कोई भ्रम तो नहीं है? अभी कल ही तो तुम ने दिया था मुझे मेरा एकनंदुन।
इतनी ही देर में बारह बरस कैसे हो गए?

मागुन : अरे वाह, राजघराने के लोगों को अब बरसों और ऋतुओं के चक्र की भी याद नहीं रही। बारह बरस पूरे हो चुके हैं, रानी! अब निभा अपना वचन! लौटा दे मुझे मेरा एकनंदुन!

भौंडिन : ओह, यह क्या कह रहे हो? सुनते ही मेरा सिर घूमने लगा है, आँखों की ज्योति धुँधलाने लगी हैं। मस्ताने जोगी,मेरा तो दिल डूबा जा रहा है। टाँगे लड़खड़ा रही है। कहीं आज सचमुच एकनंदुन का तरेहवाँ जन्म-दिन तो नहीं?

मागुन : नहीं रानी, मुझे कोई भ्रम नहीं। बारह बरसों में तुझे ध्यान ही नहीं आया कि तुझे वचन भी निभाना है। जा बुला ले एकनंदुन को।

भौंडिन : जोगी मस्ताने, राज माँगोगे राज दूँगी, ताज माँगोगे ताज दूँगी। घर की सारी धन-दौलत, खेत-ज़मीन-बाज दूँगी। जो माँगोगे सो दूँगी, पर एक एकनंदुन को मुझ से मत माँगो, मत माँगो!

मागुन : नहीं चाहिए जोगी को तेरा राज-ताज-बाज बस ज़बान का दिया वादा पूरा करो। बारह बरस के लिए दिया था सो पूरे हुए। अब लौटा दे उसे।

भौंडिन : हाथ जोड़ती हूँ, पाँव पड़ती हूँ तुम्हारे। हे दयावान, दया करो। छिमा करो अपराध हमारे। मेरा अबोध बालक पाठशाला गया है, सहपाठियों के साथ खेलने।

मागुन : पुकार तो उसे! अभी आ जाएगा दौड़ कर चाहे सात ताले क्यों ने लगे हों द्वार पर।

भौंडिन : बालक है, कहीं दूर निकल गया होगा। अभी तो उस के ओठों पर मेरा दूध लगा है। भरी दोपहर को ही रात मत बना दो। उस के बदले मैं अपने आप को करती हूँ तुम्हारे हवाले। अभी मैं ने एकनंदुन का किया कुछ नहीं देखा। कौन-सी कमाई ला कर दी है उस ने मुझे? कौन-सा राजसुख भोगा है उस ने? किन नगरों, किन गाँवों को जीत कर आया है? अभी तो वह बच्चों के खेलों में ही मगन है। लोरियाँ-सुन-सुन कर सोता है। बाल कथाएँ सुन कर खुश होता है। कभी रूठता है, कभी शरमाता। कभी झूठ को ही सच मान लेता। अभी वह बचपन की उछल-कूद में लीन है। अभी दाइयाँ गोदी में दुलराती हैं, उसे। मस्ताने जोगी, इसी अबोध बालक को माँग रहे हो मुझ से?

मागुन : होश में आ जा, रानी! वचन नहीं निभाएगी तो सर्वनाश हो जाएगा। सुख-सुहाग, कोख , राजपाट, धन-संपत्ति, ठाठ-बाट कुछ भी नहीं रह पाएगा। सारा राजमहल ईंट-ईंट ढह जाएगा। बुला ले एकनंदुन को।

भौंडिन : सुन कर तुम्हारे ये कुबोल, कलेजा मेरा छलनी हो जाता है। इतना संत्रास सहने के बाद धरती क्यों नहीं फटती और मैं उस में समाती?

मागुन : बुलाती है एकनंदुन को या नहीं? बुला ले उसे। बुला!

भौंडिन : अपना अंग-अंग तुम्हें बलि दूँगी, जोगी मस्ताने! कृपा करो! मेरा सब कुछ ले जाओ, पर पुत्र को कैसे दूँ ले जाने?

मागुन : जोगी की लेती है परीच्छा, रानी? बुला ले एकनंदुन को। बुला।

भौंडिन : मेरे इकनंदुन, आ जा! दूध-मलाई खा जा!

(नंदुवे परदा लिए मंच पर आते हैं। मागुन दर्शकों की ओर अपनी पीठ करता है और भौंडिन भी, जिस से यह आभास होता है कि एकनंदुन परदे के पीछे खड़ा है।)

मागुन : ले, आ गया मेरा एकनंदुन। अब बुला अपनी सातों बेटियों को। कह दे उन्हें, इसे दूध से नहलाएँ, इस के तन को स्वच्छ जल से धोएँ। धो कर इस के अंग-अंग को कर दें दूध-सा उजला।

(भौंडिन परदे के नज़दीक जाती है। परदा कुछ और नीचे सरक आता है)

भौंडिन : *(परदे के पास से)* आ जा मेरे एकनंदुन, तुझे गले लगाऊँ। छिन-छिन जीती हूँ मैं तेरा ही मुखड़ा निहार कर। आ तुझ पर रखूँ अपने आप को वार कर!

मागुन : छोड़ यह रोना-कलपना, यह गले लगना-लगाना। बुला ला बेटियों को, इसे है जल्दी नहलाना।

भौंडिन : भारी भूल हुई जो मैं दे बैठी तुम्हें वचन। बेटियो, जल्दी से आओ और अपने भाई को नहलाओ।

(सातों लड़कियाँ परदे के दूसरी ओर चली जाती है। भाई के चारों ओर मंडल बना कर उसे नहलाने का अभिनय करती है।)

भॉडिन : इसे वापस भेजने के लिए तैयार करना है। दोष है मेरा अपनां वचन दिया हे जोगी को, अब है तड़पना!

मागुन : हाँ-हाँ, इसे नहलाओ-धुलाओ। पवित्र स्नान कराओ। माथे पर चंदन का तिलक लगाओ।

(लड़कियां परदे के पीछे वैसा ही करने का अभिनय करती है)

मागुनः चल आगे, रानी! हाथ में मेरी यह कुलहाड़ी ले।*(कंधे से कुल्हाड़ी उतार कर परदे के पीछे चला जाता है)*अब इस का अंग अंग काट। अलग कर दे बोटी बोटी।

(लड़कियाँ की चीख निकल जाती है। वे एक मंडल बनाती है और मंचाग्र की ओर आती हैं सिर झुका कर अनुनय-विनय करती हैं।)

लड़कियाँ : *(समवेत स्वरत में)* हाय रे, हाय रे,! हाय रे!

भॉडिन : बस करो! बस करो! अब और कुबोल मत बोलो! करने ही हैं तो कुल्हाड़ी से मेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालो- मूँह से उफ भी नहीं निकलेगी।

मागुन : क्या तूने वचन नहीं दिया है?

भॉडिन : वचन दिया है तो यह रहा एकनंदुन ले जाओ इसे अपने साथ।

मागुन : इस रूप में? क्या इसी रूप में मैं ने इसे तुम को दिया था? बारह बरस यह तुम्हारा रहा। पहले इत्ता-सा था, फिर इतना हो गया और आज इतना! आ चल, इस के अंग काट और उन्हें चूल्हे की आँच पर पकां बड़ी भूख लगी है।

लड़कियाँ : हाय-हाय-हाय-हाय! ओह-ओह! आह-आह-आह!
छीनो न भैया को हमारे, मस्ताने जोगी! छीनो न भैया को हमारे!
हम पर भी कर लो दया रे, मस्ताने जोगी! छीनो न भैया को हमारे!
उस को हमारी उमर लग जाए, पैया पड़ें हम तुम्हारे।
मस्ताने जोगी पैया पडें हम तुम्हारे।
(एकाएक सिर और बाँहें घुमा-घुमा कर और ज़मीन पर पटक-पटक कर शोक-संतप्त स्वर में क्रंदन करती हैं।) छीनों न भैया को हमारे, मस्ताने जोगी! न छीनों भैया को हमारे!
(भॉडिन अपने कान बंद करती है उसे चक्कर आ जाता है)

भॉडिन : हाय, मेरे कान बहरे क्यों नहीं हो जाते! क्यों नहीं यह धरती फट जाती और मैं उस में समाती! क्यों नहीं यह राजमहल ईंट-ईंट करके ढह-ढह जाता!

मागुन : *(क्रोध में आ कर)* छोड़ यह रिरियाना! मैं जो कहूँ, वही कर! वरना शाप लगेगा मेरा सब कुछ भस्म हो जाएगा तेरा! सुहाग का और कोख का सुख, राज-पाट सब नष्ट हो जएगा। काट इस की बोटी बोटी!

भॉडिन : होश की बात करो रे जोगी! एक माँ और अपने ही हाथों अपने बेटे का अंग-अंग काटे- यह वह कैसे सहन कर सकेगी? तुम्हें इतनी भी खबर नहीं!

मागुन : वाह री माँ! पुत्र की माँ! हा-हा-हा! बारह बरस तक एकनंदुन को पालती-पोसती रही, फिर भी पुत्र की भूख तृप्त नहीं हुई? छाती से अलग करो तो कैसा बच्चा और कैसी बच्चे की माँ! **(क्रोध में आ कर)** इसे पकड़ कर रख। अपने वचन से मत मुकर! पकड़े रख पीछे से। बम भोलेनाथ की! हँह!
(लड़कियाँ फिर एक बार बाँहें आकाश की ओर उठाती हैं और हाथ पटक-पटक कर शोक भरे स्वर में विलाप करती हैं।)

लड़कियों का समवेत गानः
न मारो न मारो जोगी भैया को हमारे
पैयाँ पड़े हम तिहारे!
एक ही हमारा यह भाई दुलारा
आँखों का तारा यह भाई हमारा
इस को न मारो जोगी, कर लो दया रे!
न मारो न मारो जोगी भैया को हमारे
पैयाँ पड़े हम तिहारे!

भॉडिन : *(रोते हुए)* यह तुम ने क्या कर दिया जोगी! यह तुम ने क्या कर दिया! कुल्हाड़ी चला दी मेरे कलेजे पर! मासूम बच्चे का वध करवाया।
(लड़कियाँ एक-दूसरे के कंधों पर बाँहें रख कर और सिर झुका कर शोक भरे स्वर में करुण विलाप करती हैं। परदे के पीछे से जोगी जैसे कटे हुए अंगों को दिखाता है।)

लड़कियों का कोरस : क्यों मार डाला तुम ने भैया हमारा?
छोटे-से भैया को क्यों मारा?

मागुन : अब इसे हाँडी में डाल कर पका। चल, जल्दी कर! देख नून-तेल ठीक डाला है या नहीं!
(भाँडिन परदे के बाहर आती है और पछाड़ खा कर गिर जाती है। फिर रोते-रोते गाती है।)

भाँडिन : कौन-सी माँ अपने बेटे को मारे?
अंग-अंग आप काट डाले?
कौन-सी माँ उसे चूल्हे पर चढ़ाए?
स्वाद चखे और पकाए?

मागुन : कलछी ठीक से चला। जल्दी से पका कर तैयार कर!
(भाँडिन उठ कर परदे की ओर जाती है)

भाँडिन : होश उड़ा कर, ज़हर खिला कर,तड़पा-तड़पा कर मारा?

मागुन : अब जा और ग्यारह सकोरे ले आ! और बुला लड़कियों को! बुला उन्हें!

भाँडिन : आओ बेटियो, आओ! भाई का शुभ चाहो!

मागुन : जल्दी कर, जल्दी! काँपने-थरथराने का यह स्वाँग मत कर! ग्यारह सकोरों में परोस इसे। अपने लिए, राजा के लिए, सात बहनों के लिए, और हाँ, एक सकोरा मेरे लिए भी। अभी एक सकोरा रहता है। इस में एकनंदुन के लिए परोस! परोस लिया न?
(परदेके पीछे चार लड़कियाँ दो हाथ में दो सकोरे उठाने का अभिनय करती हैं और तीन लड़कियाँ एक-एक सकोरा लिए मंचाग्र पर आती है। सकोरे लाने का अभिनय करती हुई वे शिथिल गति से नाचती और शोक भरे स्वर में गुनगुनाती है। भाँडिन परदे के पीछे से रोती हुई आती है।)

भाँडिन : अपने ही बच्चे का माँस पकाए-- ऐसी भी माँ है कौन?
आप परोस आप न्योतने आए--ऐसी भी माँ है कौन?

मागुन : हा-हा! छोड़ यह हाँफना-काँपना! चल आगे!
(मागुन स्वयं पूरी तरह से परदे की ओट में चला जाता है)

मागुन : बुला अब एकनंदुन को! अरी देखती क्या है? आवाज़ दे! अरी पुकार!
(परदा मागुन को सिर से पाँव तक छिपा लेता है)

भाँडिन : किसे आवाज़ दूँ? किसे पुकारूँ? आप ही अपने बच्चे का अंग -अंग काट चुकी हूँ। आप ही चूल्हे पर चढ़ाया और पकाया है। फिर किसे पुकारूँ?

मागुन : *(परदे के पीछे से अपना चिमटा दिखाते हुए)* पुकार अपने बेटे को। आवाज़ दे एकनंदुन को! सकोरे में यह नैवेद्य उसी के लिए है।

भाँडिन : किसे पुकारू? किसे आवाज़ दूँ! जीभ तालू से चिपक जाती है। कंठ से आवाज़ नहीं निकल पाती। जिसे जीते जी मार डाला, वह क्या जी उठेगा?

मागुन : री तू आवाज़ तो दे! देख ले, जवाब में वह भी आवाज़ देगा!

भाँडिन : तपे हुए तवे पर बिठाया मुझे। यह कैसे दाँव पर लगाया मुझे? आ मेरी आँखों के तारे, मेरे दुलारे एकनंदुन, आ।
(मागुन परदे को अपने साथ लेता हुआ अंदर वाले कमरे में चला जाता है। लड़कियाँ अपने हाथों की ओर यों देखती हैं, मानो उन पर मिट्टी के सकोरे रखे हुए हों।)

भाँडिन : एकनंदुन? मेरे लाल, आ जा!
(दर्शकों के बीच से एकनंदुन की आवाज़ आती सुनाई देती है)

आवाज़ : क्या है माँ?

भाँडिन : एकनंदुन! तू कहाँ है?

आवाज़ : कहाँ नहीं हूँ माँ? यहाँ, वहाँ, सब कहीं खेल रहा हूँ!

भाँडिन : यह कौन है? यह सब था मेरी आँखों का भ्रम? मेरे लाड़ले एकनंदुन! मेरे लाल! यह क्या? जोगी कहाँ है? सकोरे कहाँ गए?

मम्मा मसख़रा : वह देखो, वहाँ से चला गया जोगी--वहाँ से! वो वहाँ है! वो कहाँ नहीं है? आकाश मार्ग से चला गया वो, लीला दिखला कर और गहरी बात समझा कर!
(मसख़रा गाता है। लड़कियाँ माँ के इर्द-गिर्द नाचती है)

लीला दिखला कर, कैसी गहरी बात सुझा कर, जोगी चला गया!
माया के परदों को काट गिरा कर, जोगी चला गया!
बात पुरानी नई तरह समझा कर, जोगी चला गया!
चढ़ा कसौटी पर ममता को उस ने परखा आ कर, जोगी चला गया!
(लड़कियों के बीच नाचत-नाचते भाँडिन चक्कर खा कर गिर पड़ती है। नाटक रुक जाता है। लड़कियों की भूमिका कर रहे अभिनेता उस के चारों ओर जमा हो जाते हैं। मसख़रे को छोड़ कर बाक़ी सभी घबरा जाते हैं।)

मम्मा मसख़रा : वाह! क्या कमाल है! क्या कमाल है!
(लड़कियाँ बने अभिनेता पंखा झेलते हैं। इतने में मागुन 'प्रेमी गुसाईं' का वेश धारण किए आता है। पत्नी को अचेत पड़ी देख वह घबरा जाता है और उस का सिर अपनी गोद में रख लेता है। तभी भाँडिन को होश आ जाता है।)

मागुन: क्या बात है? चक्कर आ गया था क्या? तुझे नाचना नहीं चाहिए था!

भाँडिन: क्यों कैसा रहा? नाटक करना आया या नहीं?

मम्मा मसख़रा : कमाल कर दिखाया, सचमुच कमाल! गुपाली को भी मात कर दिया!

कमाल शेर : हमें क्या पता था हमारे बीच ऐसी कलाकार भी है।
(मागुन आँखों में आए आँसू पोंछ लेता है। सभी भाँडिन के ईद-गिर्द जमा हो जाते हैं।)

भाँडिन : *(उठ कर खड़ी होती है)* यह क्या? तुम ने अपने कपड़े नहीं बदले! *(गुस्से में)* अभी ख़तम नहीं हुआ तुम्हारा जश्न?

मागुन : नहीं-नहीं, अभी नहीं।

भाँडिन: मगर क्यों नहीं। सब को अपने-अपने घर जाना है।

मागुन: नहीं, अभी मुझे नाटक खेलना है।

भाँडिन : अब क्या खेलना है?

मागुन : 'प्रेमी गुसाईं' वाला स्वाँग। 'एकनंदुन' का स्वाँग उसी में पूर्णता पाता है।

कमाल शेर : और मालिकन क्या गुपाली बनेंगी?

भाँडिन : नहीं, हरगिज़ नहीं। शमीमा को गुपाली बनते देख मुझे हमेशा जलन होती रही है। मैं नहीं करूँगी गुपाली का पार्ट। बहुत हो चुका जश्न, अब बंद करो।
(रसोई के कमरे में चली जाती है। सब इस आदेश की प्रतीक्षा में हैं कि वे क्या स्वाँग करें या घर जाएँ।)

मागुन : नहीं, जश्न जारी रहेगा। चलो, साज़ बजाओ। 'गुसाईं' वाले स्वाँग का संगीत शुरू करो।
(मागुन ने साधु की वेशभूषा के ऊपर ही शाल ओढ़ लिया है। सिर पर पगड़ी रखी हुई है जिस पर सलमे-सितारे टँके हैं। शहनाई की धुन बजती है। नटुवे और कोरस का काम कर रहे अभिनेता वैरागियों के भेस बना कर आते हैं। मसख़रों की पंक्ति भी आती है। उन में से तीन के सिर मुँड़े हुए हैं।)

मम्मा मसख़रा : मैं तो कहता हूँ मालकिन ने आज सचमुच कमाल कर दिखाया। यह बेमिसाल अदाकारी ज़िन्दगी भर याद रहेगी। सलाम तुम्हारी कला को। मेरे सभी साथियों की ओर से भी सलाम!

कमाल शेर : *(मागुन से)* यह तो बताएँ गुपाली कौन बनेगा।

मागुन: कोई भी बन सकता है। जो बनना चाहता हो, उसे बोलना ही कितना है। पर हाँ.....

कमाल शेर : तो ठीक है। *(एक नटुवे से)* चलो भाई, तुम गुपाली का भेस बना लो। जल्दी से!
(दो नटुवे हाथों में एक परदा लिए आते हैं और मंच की ओर जा कर उसे फैलाते हैं। मागुन मंच पर इधर-उधर चक्कर लगाता है मानो किसी को ढूँढ रहा हो। तीन मसख़रे आ कर उसे विस्फारित आँखों से देखते हैं। वे जैसे मागुन के बारे में ही बात कर रहे हैं।

पहला मसख़रा : *(मागुन को ऊपर से नीचे तक घूरते हुए)* अरे! ये कौन है?

दूसरा मसख़रा : हाँ भई, ये कौन है? जाने कौन हैं?

तीसरा मसख़रा: हा-हा-हा! हो-हो-हो!!

पहला मसख़रा : ये? हा-हा-हा-हा! अरे, तू इसे नहीं जानता?

दूसरा मसख़रा : नहीं तो! ये यहाँ कभी दिखलाई नहीं दिया।

तीसरा मसख़रा : अरे यही तो है पराए देस का मुर्गी चोर!

दूसरा मसख़रा : चुप बे, मुर्गीचोर होता तो क्या यह शाल ओढ़ लिया होता? पगड़ी पहनी होती?

तीसरा मसख़रा : अरे हाँ, तब तो इस के कंधे पर बंदूक होती, हाथ में बाँकी-टाकी।

(पहला मसख़रा मागुन की ओर एकटक देखता है)

पहला मसख़राः अरे ये तो वो है! वही न!

दूसरा मसख़राः कौन वही? मैं नहीं जानता इसे?

पहला मसख़रा : अरे ये वही दूलहा है जो दुल्हन को देखे बिना ही उड़न-छू हो गया था!

(बड़ा मसख़रा उसे लात मारता है)

तीसरा मसख़रा : बस कुटम्मस ही तुम्हारी दवा है, बेवकूफो! होश करो!

दूसरा मसख़रा : तो फिर ये कौन! चलो, चल कर इसी से पूछते हैं!

पहला मसख़रा : तू ही पूछ! इस की आँखें तो लपट की तरह जल रही हैं। अगिया बैताल की तरह जिस के सिर पर आग जलती है।

तीसरा मसख़रा : ना भाई, तू ही पूछ! लगता है कोई राहगीर है!

दूसरा मसख़रा : राहगीर होता हो यूँ देखता? तू ही जा कर पूछ न!

पहला मसख़रा : अरे भाई, तुझी से पूछते हैं। तू कौन है?

(मागुन चुपचाप एक दिशा में टकटकी लगाए देखता है)

दूसरा मसख़रा : ऐ भाई, यहाँ मारेंगे। यहाँ दहशतगर्द घूमते हैं। कौन है तू?

पहला मसख़रा : ऐसा मत कह, बेवकूफ़। हट पीछे!

दूसरा मसख़रा : अरे-रे यह कैसी सूरत बनाई है इस ने? यह कैसा चेहरा है? देखो तो इस की आँखें कैसे झर-झर झर रही हैं। ऐ, अरे भाई, तू है कौन?

मागुन : *(परदे की ओर इशारा करते हुए)* वहाँ दिखलाई दे रही है एक सूरत!

दूसरा मसख़रा : क्या कहा, 'मूरख'? अबे मूरख होगा तू, तेरा बाप!

पहला मसख़रा : क्या हुआ तुझे? इस ने वह नहीं कहा। ध्यान से सुन, ध्यान से।

तीसरा मसख़रा : बताता क्यों नहीं तू कौन है?

मागुन : वहाँ दिखलाई दे रही है एक सूरत!

तीसरा मसख़रा : सूरत! हा-हा-हा! तुझे भ्रम तो नहीं हो रहा? सूरत यहाँ नहीं। सूरत बहुत दूर है, समंदर के किनारे।

पहला मसख़रा : अबे तू पीछे हट! हाँ तो भाई, मैं पूछता हूँ, तू कौन है?

मागुन : एक सूरत, एक मूरत! बस एक झलक! अपन दर्शन कर लें तो जाएँ!

पहला मसख़रा : बावरा है, पूरा बावरा!

दूसरा मसख़रा : पागलख़ाने से भाग आया कोई पागल!

तीसरा मसख़रा : अरे भाई, यहाँ डायन रहती है। शाम ढले शहर और गाँव में लोगों से चिमटती है। वह तुझे खा जाएगी। लंबे-लंबे नाखून हैं उसके, ताँबे का-सा चेहरा, सफेद कपड़े!

पहला मसख़रा : पीछे को मुड़े पाँव, कंधों तक लंबे कान! पराए मुल्क से आई है। पकड़ेगी तुझे, खा जाएगी। किसी खाई-खंदक में धकेल देगी। जा, अपनी राह ले!

मागुन : दर्शन कर लें तो जाएँ।

तीसरा मसख़राः डायन! हू-हू- हा-हा! उस के सामने ठहर सकेगा?

मागुनः हमारा क्या बिगाड़ सकती है? हमें दिखाई दी एक सुंदर मूरत। दर्शन कर लें तो जाएँ।

(दो मसख़रे कुछ देर चुप रहते हैं, फिर उछल-उछल पड़ते हैं।)

तीसरा मसख़रा : जरा चुप तो करो! देखते नहीं ये कितना संजीदा है!

दूसरा मसख़रा : क्या है?

तीसरा मसख़रा : संजीदा!

दूसरा मसख़रा : तभी इस ने बैरागियों का भेस बनाया और दुशला ओढ़ रखा है?

तीसरा मसख़रा : अरे गुसाईं। जा अपने! यहाँ कोई सूरत-मूरत नहीं।

मागुन : दर्शन कर लें तो जाएँ।

पहला मसख़रा : *(गुस्से में)* यहाँ खौफ़ और खतरा है।

(अचानक दो तरफ़ से गोलियाँ चलने की आवाज़ सुनाई देती है जो कहीं नज़दीक से आती हुई प्रतीत होती है। कहीं आसपास से।)

दूसरा मसख़रा : क्रास-फ़ायरिंग!
आवाज़ : होशियार!
दूसरी आवाज़ : हुश्श! क्लाशनिकोफ़ चल रही है।
कमाल शेर : होशियार! नीचे लेट जाओ!
आवाज़ : चुपचाप बैठे रहो। मुँह से आवाज़ तक न निकले।
(चुप्पी छा जाती है। स्वाँग में भाग ले रहे अभिनेता भाँडिन को घेर लेते हैं और फ़र्श पर पसर जाते हैं। एक अन्य समूह में परदा लिए हुए नटुवे और गुपाली बन नटुआ अपनी अपनी जगह पर बैठ जाते हैं। अकेला मागुन अपनी जगह खड़ा चारों ओर दृष्टि घुमाता है मानो कुछ ढूँढ़ रहा हो। चुप्पी। कुछ देर बाद क्रॉस-फ़ायरिंग रुक जाती है और धीरे-धीरे सब सिर उठाते हैं, फिर आहिस्ता से उठ कर बैठते हैं।)
आवाज़ : हो गए शांत!
भाँडिन : *(छाती पीटती हुई)* हाय मैं मारी गई! बाडी के चारों ओर हमारा नुंदा दीवारों की ओट में गश्त लगाते हुए चौकसी कर रहा था। यह क्रॉस-फ़ायरिंग कहीं उसी के साथ तो नहीं हुई?
(एकाएक भाँडिन उठती है और चिन्ता से व्याकुल होती हुई दरवाज़े से बाहर चली जाती है। एक भाँड लड़का उस के पीछे हो लेता है।)
तीसरा मसख़रा : अरे, घर की मालकिन कहाँ चली गई?
कमाल शेर : *(मागुन से)* क्यों जी, हम भी घर चले जाएँ! सब को फ़िक्र लग रही होगी!
(मागुन कोई जवाब नहीं देता। मसख़रे धीरे-धीरे उठने लगते हैं।)
दूसरा मसख़रा : क्यों जी, घर जाएँ क्या? गोलियाँ चल रही हैं।
मागुन : खौफ़ और ख़तरा हमारा क्या कर सकता है? हमें तो दिखाई दी एक सूरत, एक सुंदर मूरत। दर्शन कर ले तो जाएँ।
पहला मसख़रा : उठो भाई, दोबारा शुरू करते हैं। ख़त्म करके ही जाते हैं।*(बिना किसी उत्साह के उठते हैं)*
दूसरा मसख़रा : ऐ जोगी! अरे भाई गुसाईं! तू आया कहाँ से और कहाँ जाएगा?
(मागुन ऊँचे स्वर में ललद्यद का पद गाता है जिस से सब की हिम्मत बंधती है। डरते-डरते अभिनेता स्वाँग को जारी रखते हैं।)

मागुन[1] : सीधी राह चला आया, जाऊँगा सीधी राह चला,
चलते-चलते बीच सेतु पर आ कर मेरा दिवस ढला।
जेब टटोली, देख फूटी कौड़ी भी तो थी न वहाँ।
पार उतरने को मैं नाव तरावा दूँ क्या, कहो भला?[1]
पहला मसख़रा : अच्छा, तो तू ख़ाली हाथ चला आया है?
तीसरा मसख़रा : जिस के पास नाव-तरावे के लिए कौड़ी भी न हो तो दर्शन कैसे करेगा? फोकट में क्या?
मागुन : जो कुछ हमारे पास है, दे देंगे। दर्शन कर लें तो जाएँ।
दूसरा मसख़रा : बता क्या है तेरे पास? क्या देगा, बता!
मागुन : आंगो में मलने के लिए श्मशान की राख! खाने के लिए सारी दुनिया का ग़म। बिछाने के लिए पहाड़ों की चोटियों पर पड़ी बर्फ़। रमने के लिए शून्य। पीने के लिए घूँट-दो घूँट भंग। और मारने के लिए दम!
दूसरा मसख़रा : ये सारी चीजें तू अपने ही पास रख। ये तुझे ही शोभा देंगी!
पहला मसख़रा : अरे भाई, इस से तो एक चुटकी नस्वार भी नहीं मिलने की। बेकार में हमारा वक़्त बर्बाद कर रहा है।
तीसरा मसख़रा : आओ, मैं इस से पूछता हूँ ये कोई राह भूला लगता है।
पहला मसख़रा : राह भूला और ये? अरे गुसाईं, तुझे सूरत-मूरत दिखाई दी थी। कहाँ भला?
(मागुन परदे की ओर इशारा करता है। तीनों मसख़रे हँसते हैं।)
तीसरा मसख़रा : चल, मैं उस से बात करता हूँ। *(परदे के पास जा कर)* अरी गुपाली,'प्रेमी' कहता है' दर्शन कर लें तो जाएँ।'
गुपाली : *(परदे के ऊपर से मुँह दिखाते हुए)* इस से कहो गायों का जो दूध दूहा था, सुबह-सवेरे सारा बेच दिया।
मागुन : दूध पर बछड़ों का अधिकार है। हमें नहीं चाहिए। बस, दर्शन कर लें तो जाएँ।
मसख़रा : री गुपाली, ये कहता है दर्शन कर लें तो जाएँ।

1. पद में थोड़ा फेर-बदल किया गया है।

गुपाली : पूछो, मुझे साथ ले जाएगा?

पहला मसख़रा : यह कैसे हो सकता है? ज़रा पूछ कर देख।

तीसरा मसख़रा : गुसाईं, गुपाली पूछती है मुझे साथ ले जाएगा?

दूसरा मसख़रा : अबे, तुझे नहीं इस-गुपाली को। गुपाली को साथ ले जाएगा?

मागुन : अपने तन पर भस्म रमाएगी?

दूसरा मसख़राः वाह, अपने चंद्रमुख को राख मल कर क्यों बिगाड़ेगी? ये कहता है तन पर भस्म रमाएगी?

गुपाली : वह भी कर लूँगी!

पहला मसख़रा : फी-फी फी! राख मलेगी? अपना रूप बिगाड़ेगी? वह भी करेगी? फी-फी!

तीसरा मसख़रा : गुसाईं, ये वह भी कर लेगी।

मागुन : सोने-ज़ेवर का त्याग करेगी?

पहला मसख़रा : हरगिज़ नहीं! सब कुछ मानेगी, पर यह बात नहीं।

दूसरा मसख़रा : औरतें भला कभी सोना-ज़ेवर पहनना छोड़ती है? कभी नहीं! फिर भी पूछ लेते हैं। गुपाली सोना-ज़ेवर पहनना छोड़ देगी?

गुपाली : वह भी करूँगी।

पहला मसख़रा : वाह, स्वीकार ही स्वीकार! किसी बात से इनकार नहीं! सुन लिया न, गुसाईं? वह भी करेगी।

मागुन : लँगोटी बाँधेगी?

दूसरा मसख़रा : फी-फी-फी-फी! हा-हा-हा-हा! *(हँसता है)*

तीसरा मसख़रा : किसी सूरत में नहीं। बचपन से जवानी तक पूरे तन को ढाँपती आई है और अब लंगोटी पहन कर निकलेगी? नंग-धड़ंग घूमेगी?

दूसरा मसख़रा : गुपाली, पूछता है लँगोटी पहनेगी?

गुपाली : वह भी कर लूँगी!

तीनों मसख़रे : हैं! *(तीनों भौंचक्के हो कर नीचे बैठ जाते हैं फिर कुछ गंभीर बनने का अभिनय करते हैं।)*

पहला मसख़रा : तो फिर बाकी क्या रहा?

दूसरा मसख़रा : अरे, गुपाली तो जोगन बन गई?

तीसरा मसख़रा : फिर भी इसे बताते हैं।

पहला मसख़रा : अरे गुसाईं, ये तो वह भी कर लेगी!

मागुन : बीहड़ों-बियाबानों, कगारों-कछारों, पहाड़ों चट्टानों में घूमेगी?

दूसरा मसख़रा : ये कौन-सी बला पीछे पड़ गई?

तीसरा मसख़रा : नहीं-नहीं, यह बात तो मान ही नहीं सकती। वहाँ क्या इसे भूखों मरना है? कहीं पाँव फिसला नहीं कि हड्डी-पसली चूर हो जाएगी।

पहला मसख़रा : री गुपाली, पूछता है जंगलों-पहाड़ों-बियाबानों में घूमेगी?

गुपाली : वह भी करूँगी!

पहला मसख़रा : लो सुनो, वह भी करेगी! तब फिर बाकी क्या रहा!

मागुन : तब तो दर्शन कर लेंगे और जाएँगे।

तीसरा मसख़रा : ले भई, कर ले दर्शन! मैं इस परदे को ज़रा नीचे खिसका लेता हूँ। थोड़ा-सा नीचे, धीरे-धीरे। ले, अब देख ले सूरत! *(मसख़रा परदे को थोड़ा नीचे खिसकाता है। परदे के पीछे गुपाली दिखाई देती है)*

तीसरा मसख़रा : यह रही वो सुंदर सूरत-मूरत! *(परदा फिर से ऊपर चढ़ा लेता है)* कर लिए दर्शन? अब बता गुसाईं, तू कहाँ जाएगा?

मागुन : *(ललद्यद का पद गाते हुए)*
चलते आए हैं और चलते ही जाना है
चलना है दिन और रात
आए जहाँ से हैं लौट वहीं जाना है
कुछ नहीं तो क्या है फिर बात
(पद सुन कर एक मसख़रा भौंचक्का-सा दूसरे की गोदी में जा कर बैठता है और तीसरा हकलाया-सा उन की ओर देखने लगता है।)

दूसरा मसख़रा : और गुपाली को कहाँ ले जाएगा? किस रास्ते से?

मागुन : *(ललद्यद का एक और पद गाते हुए)*
आई हूँ मैं किस दिशा और किस पथ से
किस पथ से जाना है मुझ को, क्या जानूँ
पर दाय अंत में वहीं मिलेगा मुझ को
इस श्वास-मात्र में सार-सत्त्व है कितना?
(मसख़रे अपने हाथ पर 'फू-फू' करते हुए फूँक मारते हैं)

पहला मसख़रा : *(धीरे से)* गई! अब तो गुपाली गई! रे गुसाईं, अब हम गुपाली को कहाँ ढूँढ़ेंगे? कहाँ उस का पता लगाएँगे? बता।

मागुन : इस देह में खोज उसे तू
यही देह है आत्म-स्वरूप
लोभ-मोह से निवृत्ति पा
पूर्ण-प्रकाशित होगा इस का रूप

दूसरा मसख़रा : अब तो तूने कर लिए दर्शन। कर लिए न? अब बता गुसाईं कि कैसी है गुपाली!

मागुन : वही मातृरूप में पय दे
भार्या रूप वह धरे विशेष
माया रूप में प्राण वह हरे
शिव है गूढ़- चीन्ह उपदेश ... चीन्ह उपदेश... चीन्ह उपदेश
(दो मसख़रे मागुन के सामने हाथ जोड़ कर खड़े हो जाते हैं)

तीसरा मसख़रा : गुसाईं, यह तो बता गुपाली क्यों जाए तेरे साथ? उस से अगर पूछें तो वो भला क्या कहेगी? बता तो सही!

मागुन : मित्र समझ कर नेह लगाया
तुझे ढूँढ़ते डूबा दिन
तुझ को जब अपने में पाया
'तू- मैं' एक हुए उस छिन

पहला मसख़रा : समझ में नहीं आता गुसाईं कि तू किस दीन का है, किस धर्म का!

मगुन : शिव है कण-कण में विद्यमान
क्या हिन्दू है क्या मुसलमान
(गुपाली, जो परदे के पीछे खड़ी है, परदे के ऊपर से अपना मुँह दिखाती है)

दूसरा मसख़रा : अच्छा गुसाईं, तू ने तो गुपाली को देख लिया। अब ये भी तुझे देख ले। ले, मैं इस परदे को धीरे-धीरे कुछ नीचे सरकाता हूँ। तू भी इसे अपना मुँह दिखा। मतलब कि दर्शन दे।

(मसख़रा परदे को नीचे सरकाता है। दूसरी ओर से दो नटुवे दूसरा परदा लेकर आते हैं और मागुन के पीछे जा कर खड़े हो जाते हैं मंचाग्र पर एक छोर पर मागुन और उस के ठीक सामने वाले छोर पर गुपाली है। दोनों दर्शकों को स्पष्ट दिखाई देते हैं)

मागुन : इस रंगमंच पर भिन्न सभी को पाएगा
तू सब कुछ सहन करेगा तो पाएगा सुख
तू क्रोध-ईर्ष्या-बैर मिटा जो पाएगा
तब कहीं दिखाई देगा तुझ को शिव का मुख...
शिव का मुख... शिव का मुख... शिव का मुख...
(मागुन अभी यह पद गा ही रहा होता है कि उसे परदे की ओट में ले लिया जाता है और मंच-पार्श्व में धीरे-धीरे ऊपर उठा लिया जाता है। गुपाली और अन्य पात्र उसी की ओर देखते हुए कुछ पग उस के पीछे-पीछे जाते हैं परदा मागुन को अपनी लपेट में छिपा लेता है और उसे अदर वाले कमरे में पहुँचा दिया जाता है। अन्य पात्र ऊपर आकाश की ओर देखने लगते है। गुपाली मंचाग्र पर खड़ी रहती है परदा उठाने वाले दो नटुवे उस से थोड़ा पीछे रहते हैं।)

पहला मसख़रा : यह क्या हुआ, गुपाली? प्रेमी तो आकाश में अदृश्य हो गया!

दूसरा मसख़रा : उड़न-छू हुआ ऊपर आकाश में!

तीसरा मसख़रा : न अपना कोई पता दिया न ठिकाना! काया न छाया! चला गया अपने बेपरवाह!

गुपाली : अब मैं उसे कहाँ ढूँढ़ूँ? कहाँ खोजने जाऊँ हाय, किस ने उसे मार डाला?

पहला मसख़रा : हमें हमारा गुसाईं ला दे। बता तो कहाँ गया?

दूसरा मसख़रा : वरना उस की कोई पहचान, कोई निशानी ही दे जा!

तीसरा मसख़रा : कोई हम से पूछे तो हम क्या बताएँ? क्या दिखाएँ?

गुपाली : हाय, तुझे किस ने मार डाला, गुसाईं। किस ने मार डाला, हाय?

तीनों मसख़रे : *(एक साथ)* तू ने ही उसे मार डाला, हाय! तू ने ही उसे मार डाला, हाय!

गुपाली : तेरी कहाँ मिलेगी कोई निशानी? तुझे किस ने मार डाला, हाय!

(अचानक भाँडिन ज़ोर से चीख़ मार कर, दहाड़ें मार-मार कर रोती हुई प्रवेश करती है। भाँड नटुवा, जो साधुओं के वेश में है, बाँहो पर नुंदा की लाश लिए आता है सभी स्तब्ध रह जाते हैं। नटुवा लाश को मंच के बीचों-बीच रख देता है। भाँडिन छाती-पीटती और रोती-कलपती है)

भाँडिन : मेरे पूत! मेरे लाल! मेरी आँखों के प्रकाश! मेरे कलेजे के टुकड़े करके तू कहाँ चला गया रे? मेरे लाल! मेरी आँखों के प्रकाश! *(भाँडिन जैसे अपने बाल नोचती है, कपड़े फाड़ डालती है। उस के इर्द-गिर्द खड़े अन्य पात्र भौचक्के और भयभीत है। उस का क्रंदन सुन कर मागुन का हृदय शोक से भर आता है और वह पछाड़ खा कर लाश के पास जा गिरता है। सदमें में आ कर वह दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ता है। वह अब भी साधु के वेश में है।)*

भाँडिन : ओ मेरे नुंदा! ओ मेरे पूत! मेरे लायक़ बेटे! ओ भाँड कुल के तारे! मेरे दुलारे!
(सात लड़कियां की भूमिका करने वाले नटुवे, घुटनों पर झुक कर विलाप के स्वर में गाते है। गुपाली और अन्य पात्रों का अभिनय करने वाले भाँड उस का साथ देते हैं।)

कोरस : तुझे उन्होंने क्यों मारा? क्यों मारा? क्यों मारा रे?

भाँडिन : रे लाल! मेरे नुंदा! कमाई के ऊँचे पेड़ मेरे! पूत रे!

कोरस : तुझे क्यों मारा? क्यों मारा? क्यों मारा?

भाँडिन : हाय, तू तो उन्हीं के कहे पर चलता था! मेरे गले के मोतियों के हार, मेरी बाँह के बाजूबंद! मेरे नुंदा! मेरे पूत!

कोरस : तुझे क्यों मारा? क्यों मारा? क्यों मारा रे?

भाँडिन : तुझ पर जी-जान क़ुर्बान करूँ! अपने आप को वारूँ! कौन तेरे बिना मंच पर आएगा स्वाँग करने, 'नाचने, गाने! मेरे लाल! मेरे बेटे? कमाई के ऊँचे पेड़ मेरे! मेरे पूत!

कोरस : तुझे क्यों मारा? क्यों मारा? क्यों मारा रे?

भाँडिन : *(ग़ुस्से और शिकायत भरे स्वर में मागुन से रोते-रोते)* लो, देख लो जश्न खेलने का अंजाम, रसूल मागुन! तुम्हारे बेटे, तुम्हारी कला के रखवाले, तुम्हारी विरासत के वारिस को मार डाला उन लोगों ने। भून डाला गोलियों से!

(मागुन उसे छाती के साथ लगा लेता है, फिर उठ कर खड़े होने की कोशिश करता है। अन्य पात्र आँसू बहाते हुए, भयभीत- से हो कर देखते हैं।)

भाँडिन : आओ, ओर जगाओ मेरे एकनंदुन को! ज़िन्दा करो मेरे बेटे को! *(मागुन का दामन खींचती है)* तीस साल से तुम्हारा बल, तुम्हारा चमत्कार देखती आई हूँ। गुसाईं का भेस बना कर, अलख बम भोले की रट लगा कर बोटी-बोटी कर चुके एकनंदुन को, तुम्हीं तो फिर से जिलाते आए हो, मेरे इकलौते बेटे को ज़िन्दा कर दो! ज़िन्दा कर दो मेरे एकनंदुन को, अपने एकनंदुन को, गोलियाँ खा कर गिरे हमारे एकनंदुन को! जिलाओ ज़िन्दा करो मेरे नुंदा को!
(मागुन गुमसुम-सा दम सँभालता है। फिर कुछ देर दोनो हाथों में अपना मुँह छिपा लेता है, आँसू पोंछता है।)

मागुन : *(खेद भरे स्वर में)* मेरे किस बल, किस छल, किस झाड़-फूँक से ये फिर जी उठेगा? जो मरा सो गया। वो कहाँ जी उठता है फिर ?

भाँडिन : क्या? कहते हो तुम्हारे किस बल, किस छल से जी उठेगा? अरे आकाश मार्ग से जाते हुए क्या तुम्हीं नहीं कहते हो भट्टिनी[1] से, पुत्र की माँ से[2] कुजमाल[3] से, राजरानी[4] से सोनमाल से[5] कि एकनंदुन को आवाज़ दो, पुकारो? मैं भी तो पुकार रही हूँ अपने बेटे को, नुंद लाला को। आओ, मेरी आँखों के तारे, मेरे दुलारे, आओ! तो फिर उठो, ताकि ये सब अपने-अपने घरों को जाएँ।
(लाश को झकझोरती है, उस की आँखों को खोल कर देखती है, उस के हाथ मलती है।)

मागुन : *(धैर्य खो कर)* ओ हो, बंद करो यह रोना-चिल्लाना, यह विलाप। मैं भला उसे कैसे जिला सकता हूँ?

---

1. कश्मीरी हिन्दू स्त्री, एकनंदन की माँ।
2. 3, 4, और 5, 'एकनंदन' (एकनंदन) की कथा के विभिन्न संस्करणों में आए रानी के नाम

भौंडिन : क्यों नहीं जिला सकते? कहाँ गया वह तुम्हारा गुसाईं वाला बल? क्या तुम इस के बिना तड़पोगे-छटपटाओगे नहीं? बढ़ापे में रंगमंच पर पैर रखते हुए डगमगाओगे नहीं? श्रुक[1] और वाक् [2] गाते समय थर-थर काँपोगे नहीं, जैसे जाड़ों की हवा में पत्ता काँपता है? बोटी-बोटी कर लेने, सकोरों में परोसे जाने के बाद भी एकनंदुन को कैसे ज़िन्दा कर लेते थे? मेरे लाल, मेरे नुंदा को ज़िन्दा क्यों नहीं कर सकते?

मागुन : कैसे ज़िन्दा हो सकेगा ये? *(उसाँस भरता है)*

भौंडिन : वैसे ही जैसे एकनंदुन हुआ था।

मागुन : एकनंदुन तो प्रतीक है, अलामत है। मायाजाल के परदे को फ़ाड़ कर जीने का, हसने-बसने का प्रतीक। मौत पर जीवन की विजय का प्रतीक। एकनंदुन न मरता है न मारा जाता है। यह तो सब रंगछल है, भ्रम है। परदे की माया, परदे के पीछे चलने वाला प्रपंच। रंग-भ्रम पैदा करने के लिए परदे का इस्तेमाल किया जाता है। यो जो परदा है न, इस का!

भौंडिन : तब तो मैं ने उम्र भर धोखा ही खाया है। आज भी खाया! रंगछल से मारा गया मेरा लाड़ला बेटा!
(फिर से विलाप करने लगती है)

भौंडिन : हाय, तू ने गाँव के लिए गँवाई जान, जश्न के लिए दिए अपने प्राण! ओ मेरी आँखों के प्रकाश! मेरे पूत!

कोरस : अब मैं कहाँ जाऊँ? तुझे कहाँ पाऊँ? कहाँ जाऊँ? तुझे कहाँ पाऊँ?

मागुन : इस ऋषियों की बाड़ी में जो बंदूक उठाए, उस का अंजाम बंदूक से ही होगा।

भौंडिन : किसी रंगछल से ही सही, पर जिला दो मेरे बेटे को, रसूल मागुन! चाहे जैसे हो, मेरे बेटे को जिला दो!
(भौंडिन जैसे आवेश में आ कर मागुन की छाती पर मुक्के मारती है)

भौंडिन : ज़िन्दा कर दो मेरे जिगर के टुकड़े को। मेरे एकनंदुन, मेरे लाडले को ज़िन्दा कर दो!
(मागुन रोना चाहता है, मगर रुलाई को रोक लेता है। उत्तेजित-सा हो कर वह मंच पर यहाँ-वहाँ घूमता है।)

1. और 2 शेख नुरुद्दन के पदों को 'श्रुक' और ललद्यद के पदों को 'वाक्' कहते हैं।

मागुन : किस शक्ति से ज़िन्दा कर दूँ? तुझे भ्रम है। यह सारा दोष असल में इस परदे का है। *(नीचे पड़ा हुआ परदा उठा लेता है)* भट्टों[1] की भाषा में इसे यवनिका कहते हैं। परदे के पीछे से रंगभ्रम पैदा करता है कलाकार। परदों की वजह से हमने हमेशा धोखा खाया है। जो कुछ कहने या करने लायक़ नहीं होता, उसे परदे के पीछे छिपा कर दिखाया जाता है। आज हमारी जो हालत है, उस के लिए भी परदे ही ज़िम्मेदार हैं। जब से हम एक बड़े देश के शहरी बने, तभी से सच्चाई को परदों के पीछे छिपाया जाता रहा है। कभी इस की इबारत बदली जाती है, तो कभी नारे। अक्षरों में फेर-बदल किया जाता है। कभी एक रूप दिखाया जाता है तो कभी दूसरा। इंसानियत,प्यार-मुहब्बत, भाईचारे, मेल-मिलाप, अमन शांति की बजाय इसे नफ़रत, हिंसा अफ़रातफ़री, मज़हबी जुनून और मारकाट के खूनी रंग में रंगा जा रहा है। सारी सच्चाई इस परदे के पीछे छिपी है। इस परदे को फाड़ डालना होगा। सच्चाई को प्रकट करना होगा। सचाई को किसी आड़ की ज़रूरत नहीं। कोई भ्रम नहीं रहना चाहिए। अब किस बात का डर है? मैं फाड़ डालता हूँ इस परदे को। *(आवेश में आ कर परदे को फाड़ डालता है और उसे लाश के ऊपर डाल देता है)* अब सारे भ्रम दूर हो जाएँगे- सभी के सभी! और तू भी समझ जाएगी कि मैं भी तेरी तरह एक बेबस इंसान हूँ। बेबस इंसान!
(थक कर घुटनों के बल सिर झुकाए बैठ जाता है)

मम्पा मसख़रा : इस तरह के वैराग्य में इस बेचारे का क्या दोष है? जिसे भी बेटे की मौत का दुख-सहना पड़े, वही अपना दामन चाक करता है।
(झटके से दरवाज़ा खुल जाता है और एक बंदूकधारी नाक़ाबपोश अंदर आ कर कड़कती आवाज़ में चीखता है)

1, हिन्दुओं

नक़ाबपोश : खबरदार! कोई हिले-डुले नहीं। सब अपनी-अपनी जगह पर रहें। कोई भी हरकत न करें।

(वाद्यकारों को नक़ाबापोश अलग एक तरफ़ को ले जाते है।)

भाँडिन : आ गए, नुंदा के क़ातिल आ गए। इन्होने ही उसे मारा है। यही हैं मेरे बेटे को मारने वाले!

प्रमुख नक़ाबपोश: खामोश! इस के हाथियार कहाँ छिपा कर रखे हैं?

भाँडिन : कौन-से हथियार?

प्रमुख नक़ाबपोश : बताते क्यों नहीं? कहाँ हैं इस के हथियार?

भाँडिन : हथियार तो ये अपने साथ ले गया था।

दूसरा नक़ाबापोश: इस के साथ कौन-कौन था?

भाँडिन : ये अकेला था।

(भाँडिन मागुन के आगे बाँहे फैला कर मानो उस की रक्षा को खड़ी हो जाती है। नक़ाबापोश सब के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते है।)

तीसरा नक़ाबापोश: ये किस जगह गिरा था?

(वह भाँड जो लाश को उठा कर लाया था, उत्तर देता है।)

एक भाँड : बाड़ी के अंदर जो नाला है उस में। वही जहाँ पर पत्थर पड़े हैं। मैं दिखाता हूँ।

(प्रमुख नक़ाबपोश एक साथी को इशारा करता है और उसे एक टॉर्च पकड़ाता है)

प्रमुख नक़ाबपोश: तुम इस के साथ जाओ। *(नक़ाबपोश भाँड के साथ बाहर जाता है)*

भाँडिन: *(चिल्ला कर)* ले गए! अमा नटुवे को ले गए। अब उसे मार डालेंगे!

दूसरा नक़ाबापोश : नहीं, मारेंगे नहीं। ये हमें दिखाए कि सामान कहाँ है? हम सामान लेने आए है।

भाँडिन : *(काफ़ी साहस जुटा कर)* मरे नुंदा को क्यों मारा तुम लोगों ने? तुम्हारे हाथ झड़ जाएँ

प्रमुख नक़ाबपोश: इस ने हुक्म-उदूली[1] की थी।

1. आज्ञा का उल्लंघन

मागुन : इस ने अपनी विरासत की रखवाली की थी। बिना किसी गुनाह के नौजवानों को मारते हो। खुदा तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा। कभी नहीं।

दूसरा नक़ाबपोश : तुम लोग मुख़बिरी करते हो शहनाई बजा-बजा कर और गा-गा कर सिक्योरिटी वाले कुत्तों को आने के लिए इशारा करते हो। तुम्हारा भी यही अंजाम होगा।

मागुन : तुम अपनी करतूतों के अंजाम की फ़िक्र करो। हम क्यों छोड़े अपना पुश्तैनी काम? चार साल हो गए हैं अब हमें कोई स्वाँग, कोई नाटक किए हुए, किसी मेले-ठेले या त्योहार में गए। आज अगर दर-दरवाज़े बंद कर के यहाँ पर जमा हुए तो तुम्हें यह भी अच्छा नहीं लगा?

दूसरा नक़ाबपोश : तुम लोगों के लिए ही हम मरते हैं। तुम लोगों के लिए ज़ख्मी होते हैं, जिहाद करते हैं और तू जश्न करने चला है?

कमाल शेर : तुम लोगों की मत मारी गई है। यह कौन-सा जिहाद है?

प्रमुख नक़ाबपोश: जिहाद नहीं तो क्या है? आज़ादी क्या तश्तरी में रखी मिलेगी?

कमाल शेर: *(साहस कर के)* जिहाद का मतलब है ऐलान कर के दुश्मन के सामने आना और जंग करना, न कि पीठ पीछे गोलियाँ बरसाना, सोते हुओं को गोलियों से भून डालना। मज़हब कहता है कि दुश्मन अगर सोया हुआ हो तो उसे जगाओ। फिर जब वो हाथों में हथियार ले ले, तब उस के साथ लड़ो। पर तुम क्या करते हो? मुखबिर कह कर लोगों को गोलियों से उड़ाते हो। क्या यही जहाद है?

प्रमुख नक़ापपोश: चुप रहो बे। हमें मुख़बिरी मत सुना। जो हमारी बात नहीं मानेगा, उसे हम गोली से उड़ा देंगे। हम किसी ग़द्दार को बर्दाश्त नहीं करेंगे।

मागुन : *(उत्तेजित हो कर)* अपनी बाहों की ताक़त और अपने दिमाग़ को गिरवी रख कर, पराए देशों से हथियार ला कर, मुँह पर नक़ाब चढ़ा कर, भाईबंदों, बुद्धिजीवियों, डाक्टरों और कलाकारों को मौत के घाट उतारना- क्या यही जिहाद है? लोगों में दहशत फैला कर उन के घरों से सामान को लूटना, बैंकों में डाके डालना,सोना-ज़ेवर ऐंठना, मासूम बच्चों को गुमराह करना, रुपयों का लालच दे कर नौजवानों को

चोर-चकार बनाना-क्या यही जिहाद है? पराए देश के निशानेबाज़ों को मेहमान बना कर लाना, कश्मीर की इज्ज़त और कुँआरी लड़कियाँ उन्हें भेंट में देना- क्या यही जिहाद है? बेग़ैरतो! आम लोगों की सुविधा के लिए बने पुलों को उड़ाना, शिक्षा के स्थानों को जला कर राख कर डालना, क़दम-क़दम पर मौत का सामान बिछाना- क्या यही जिहाद है? या दीन और मज़हब को बदनाम करना, इबादतगाहों[1] की पवित्रता को भंग करना-यह जिहाद है? बेशरमो! बेज़मीरो!

प्रमुख नक़ाबपोश : वाह, मुख़बिर की क्या ख़ूब अदा है?ज़बान चलरही है या रॉकेट?

दूसरा नक़ाबपोश: मुसलमान हो कर भी तू बेईमान हो गया है।

मागुन : तुम क्या जानो, मुसलमान क्या होता है, ईमान क्या होता है?

प्रमुख नुक़ाबपोश : *(बंदूक़ दिखा कर)* इस से डरता है या नहीं? ये बड़ों-बड़ों को ईमान की राह पर लाया है।

मागुन : जब ईमान का इम्तिहान हो तो क़ुर्बान होने से क्या डरना? *(इसी समय बिजली चली जाती है)*

प्रमुख नक़ाबपोश: अफ़सोस, बिजली चली गई! टार्च जलाओ।

(सभी नक़ाबपोश अपनी-अपनी टॉर्चें जलाते हैं और मागुन और भाँडिन के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हैं। भाँडिन मागुन के आगे खड़ी हो कर अपनी बाहें फैलाती है, यह जतलाने के लिए कि उसे बचाने के लिए वह अपनी जान तक देने को तैयार है। आतंकवादी अपने बूटों की धमक से दहशत उत्पन्न करते हैं। इसी समय बाहर गया हुआ नक़ाबपोश और अमा नटुवा प्रवेश करते है। नक़ाबपोश के दोनों कंधों पर दो बंदूकें हैं। एक हाथ में वह टार्च और दूसरे में एक और बंदूक़ लिए हुए है)

नक़ाबपोश: *(अंदर आते हुए) हथियार वसूल कर लिए ए. सी. साहब। ये रहे।*

(अन्य नक़ाबपोशों में जा कर मिल जाता है।) हमारे नारों का जवाब दो?

प्रमुख नक़ाबपोश : हम क्या चाहते ?

अन्य नक़ाबपोश : आज़ादी!

दूसरा नक़ाबपोश : आज़ादी का मतलब क्या?

1. पूजा स्थलों

अन्य नक़ाबपोश : निज़ामे मुस्तफ़ा!

प्रमुख नक़ाबपोश : पकिस्तान से रिश्ता क्या?

(सभी नक़ाबपोश एक वृत्त में घूमते है। प्रमुख नक़ाबपोश टॉर्च से ऊपर की ओर रोश्नी डालता है। दूसरा नक़ाबपोश मागुन पर गोली चलाता है)

अन्य नक़ाबपोश : ला इलाहे-इल्लिलाह!

(यह कहते हुए वे एकाएक बाहर चले जाते है। अँधेरे में एक चीख़ सुनाई देती है)

भाँडिन : अरे, यह किसे मार डाला, यह किसे मार डाला?

एक आवाज़: अंधेर मचा दी!

मागुन : या...आ...आ...खुदा...आ....आ...या...आ... रसूल!

(दोहरा हो कर बेटे की लाश के ऊपर गिरता है)

भाँडिन : तो क्या... क्या... तु.... तु.... तुम्हें भी मार डाला?

दूसरी आवाज़ : लस्सू! लस्सू काका!

भाँडिन : मार डाला तुम्हें सब कहने पर? बेहथियार, बेऔलाद मार डाला? तुम ही थे क्या इन के जिहाद की मंज़िल?

कमाल शेर : *(भर्राए गले से)* टिड्डियाँ गई पर धान का सत्यानाश करके! ज़रा कोई रोश्नी तो जलाए। लकड़ी की मशाल या कुछ! *(एक भाँड दियासलाई जलाता है)*

कमाल शेर: ओह! मेरे बचपन के साथी को मार डाला! मेरे खेल के साथी को मार डाला!

(तभी बिजली आ जाती है। सभी हाथ मलते हुए मागुन के शव के पास जमा होते है।।

आवाज़: ओह मागुन को भी मार डाला!

दूसरी आवाज़ : हाय खुदाया! अरे बेरहमो!

एक भाँड : अरे तुम्हारा सत्यानाश हो जाए! खुदा का खौफ़ भी नहीं तुम्हें?

भाँडिन: अभी मैं ज़िन्दा हूँ। मेरे सामने मेरे सरताज और मेरे बेटे की लाशें पड़ी हैं। हथियार गढ़ने और हथियार से खेलने का अंजाम।

कमाल शेर: *(आँसू पोंछता है और मागुन के जामे में अपना मुँह छिपा लेता है।)* हाय, मेरे खेल के साथी, हम सब के मागुन, हमारे बुज़ुर्ग अगुआ, हमारी विरासत के रखवाले को मार डाला। हाय हाय!

भाँडिन : खामोश! चुप हो जाओ सभी। जी को कड़ा करो! दर्द को दिलों के अंदर सहेजो। मेरी ओर देखो। सभी मेरी ओर देखो।

(सभी आर्त हो कर उस की ओर देखने लगते है। कमाल शेर अपना मुँह नोचता हुआ सारे रंगमंच पर फिरता है)

भाँडिन : मेरे सीने में एक ओर बेटे के मरने का दुःख है और दूसरी ओर घरवाले से बिछुड़ने का दर्द। यह दुःख एक नए प्रकाश, एक नए नूर को जन्म देगा और हमें दहशतगर्दी और अफ़रातफ़री से छुटकारा दिलाएगा।

एक भाँड: हमारे मागुन को मार डालए। एक आधार स्तंभ ढह गया!

कोरस : अब हम उसे कहाँ ढूँढ़ें? कहाँ पाएँ? कहाँ पाएँ?

(मम्मा मसखरा अपने आप को लिथेड़ता हुआ आता है और रोते कंठ से ऊँचे स्वर में गाता है--)

मम्मा मसखरा : जब आधार नहीं रहते हैं
ऊँचे राजमहल ढहते हैं
नष्ट-भ्रष्ट हो जाने पर सब
प्राण कहाँ टिक पाएँगे तब
साया उठे पिता का तो फिर
माँ की शरण सभी गहते हैं[1]
(सभी भाँड आ कर भाँडिन को घेरते हैं। एक वृत्त बनाते हुए वे घुटनों के बल आर्त हो कर बैठते हैं और उस के स्वर में स्वर मिलाते हैं।)

सभी : साया उठे पिता का तो फिर
माँ की शरण सभी गहते हैं।
हाय, माँ की शरण, सभी गहते हैं।
(इस से कमाल शेर की कुछ हिम्मत बँधती है)

कमाल शेर: हिन्दू कहा करते थे कि कश्मीर में जब जलदेव ने आतंक मचाया था तब देवी माँ ने ही पत्थर गिरा कर उसे कुचल डाला था।

1. शेख नूरुद्दीन का पद

सभी : साया उठे पिता का तो फिर
माँ की शरण सभी गहते हैं...
सभी गहते हैं... सभी गहते हैं...
(भाँडिन उठ कर खड़ी होती है और अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर आकाश की ओर देखती है, फिर बैठ जाती है।)

भाँडिन : इस रंग-मंडले को मिल्टनों[1] ने त्रास का मंडवा बना दिया। पहले आने वाले मागुन को मारा और उस के बाद आज के मागुन को। पर निराश मत होओ। उठो, अभी मैं जो हूँ-- तुम सब की माँ! तुम्हारे जीते और जागने की आशा मन में लिए जीवित माँ! उठो कि कल कोई एकनंदुन न मारा जाए। उठो, डरो मत! उन सब से कह दो कि रास्ता छोड़े, जिन की मंज़िल हिंसा है, जंग है, मौत है। जो चाहते हैं कि घर-घर में अंधेरा हो, मातम हो, क्रंदन हो, विलाप हो! चलो, मेरे साथ चलो। चलो अपनी जड़ों की ओर, अपने मूल्यों की ओर! अपनी परंपरा की रक्षा करते हुए चलो। चलो मुझ माँ के साथ नई रोशनी की ओर चलो। मेल-मिलाप की ओर, जीवन की ओर! माँ कश्मीर का माथा उज्जवल! उठो अपने बाग़ को इस आग से बाहर निकालो। उठो!

कमाल शेर : *(दो लाशों के बीच घुटनों के बल बैठे हुए)* बाप बेटे-का मातम करें या तुम्हारे साथ चलें?

भाँडिन : कारवाँ के साथ चलते हुए कोई-कोई बिछुड़ भी जाता है, मगर कारवाँ नहीं रुकता। जाने वाले से बिछुड़ने का दुःख सब के दिलों पर अपना-निशान छोड़ जाता है। लेकिन जिन्हें मंज़िल को पाना हो तो आगे ही आगे क़दम बढ़ाते है, रुक नहीं जाते। उठो। चलो मेरे साथ। मैं तुम्हारी मार्गदर्शक हूँ, तुम्हारी माँ! चलो!
(धीरे धीरे सब खड़े हो जाते हैं, धीरे धीरे अपने हाथ ऊपर उठाते हैं और दर्शकों की ओर पीठ करके सामने फैल रहे प्रकाश की ओर चल पड़ते है।)

2.'मिलिटैंट्स' (आतंकवादियों) ने